

Invoking the Divine

Year 2 Issue 5 September-October 2013 Membership Postage: Rs. 100





Hari Om

Avahan is a bi-lingual and bi-monthly magazine compiled, composed and published by the sannya-sin disciples of Sri Swami Satyananda Saraswati for the benefit of all people who seek health, happiness and enlightenment. It contains the teachings of Sri Swami Sivananda, Sri Swami Satyananda and Swami Niranjanananda, along with the programs of Sannyasa Peeth.

Editor: Swami Yogamaya Saraswati **Assistant Editor**: Swami Sivadhyanam Saraswati

Published by Sannyasa Peeth, c/o Ganga Darshan, Fort, Munger – 811 201, Bihar.

Printed at Thomson Press India (Ltd), Haryana

© Sannyasa Peeth 2013

Membership is held on a yearly basis. Late subscriptions include issues from January to December. Please send your requests for application and all correspondence to:

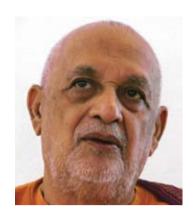
Sannyasa Peeth

c/o Ganga Darshan Fort, Munger, 811 201 Bihar, India

☑ A self-addressed, stamped envelope must be sent along with enquiries to ensure a response to your request

Front cover: Kedareshwar, Paduka Darshan, Munger

Plates: 1: Swami Satyananda Saraswati 1950s; 2-3: Kedareshwar; 4-5: Brahma Sarovar, beyond Kedarnath; 6-7: Kedarnath temple; 8: Swami Niranjanananda Saraswati



SATYAM SPEAKS – सत्यम् वाणी

To invoke the higher forces, some prayers should be recited. These prayers are not like begging something from someone, nor are they praises of a higher being; they are merely invocations. In Sanskrit and Hindi, there is a proper term used for such prayers. Avahan is this invocational prayer which literally means, 'I am calling'. What you are actually doing is calling certain forces to help you in your task.

-Swami Satyananda

उच्च शक्तियों की जागृति के लिये कुछ प्रार्थनाएँ भी अवश्य करनी चाहिये। ये प्रार्थनाएँ किसी से कुछ माँगने के लिये अथवा किसी की स्तृति के लिये नहीं होतीं। ये मात्र आवाहन हैं, जिसका अर्थ होता है बुलाना। इनके द्वारा आप किसी विशेष शक्ति को अपने कार्य में मदद के लिये बुलाते हैं।

—स्वामी सत्यानन्द

Published and printed by Swami Shankarananda Saraswati on behalf of Sannyasa Peeth, c/o Ganga Darshan, Fort, Munger – 811 201, Bihar.

Printed at Thomson Press India (Ltd), 18/35 Milestone, Delhi Mathura Rd., Faridabad, Haryana. **Owned** by Sannyasa Peeth **Editor**: Swami Yogamaya Saraswati



Satya ka

Invoking the Divine

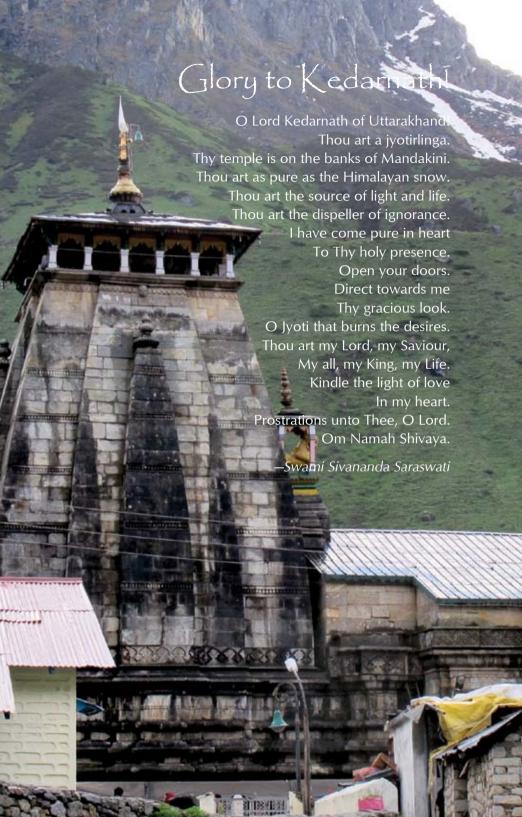
ar 2 Issue 5 • September-October 2013

न तु अहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भनम् । कामये दुःखतप्तानां प्राणिनां आर्तिनाशनम् ॥ "I do not desire a kingdom or heaven or even liberation. My only desire is to alleviate the misery and affliction of others."

-Rantideva

Contents

- Glory to Kedarnath
- रुद्राभिषेक का महत्त्व
- 4 Shiva's Bounty
- 6 केदार की स्मृतियाँ
- 9 Memories of Kedar
- 13 भगवान और उनके मंदिर
- 18 Shiva Darshan at Kedarnath, the Himalayas
- 31 केदारनाथ में शिव दर्शन
- 41 Shiva's Message of Light
- 43 केदारनाथ की अविस्मरणीय यात्रा
- 47 Will of Shiva
- 48 शंकर सुखकर प्रलयंकर



रुद्राभिषेक का महत्त्व

रवामी शिवानन्द सरस्वती

'अलंकारप्रियो विष्णुः, अभिषेकप्रियः शिवः' – भगवान विष्णु को जहाँ अलंकार प्रिय हैं, वहीं भगवान शिव को अभिषेक बहुत पसंद है। शिव मंदिरों में एक तांबे या पीतल का बर्तन रहता है, जिसमें नीचे छेद होता है। वह शिवलिंग के ऊपर लटकाया जाता है, जिससे दिन-रात शिवलिंग पर पानी की धार अनवरत गिरती रहती है। शिवलिंग का अभिषेक जल, दूध, घी, दही, शहद, नारियल पानी, पंचामृत आदि से करते हैं। अभिषेक के साथ-साथ मंत्र और स्तोत्र पाठ किया जाता है। ऐसे अभिषेक से भगवान आश्तोष त्रंत संतृष्ट हो जाते हैं।



अभिषेक शिव-पूजा का एक अभिन्न अंग है। इसके बिना शिव-आराधना अधूरी है। अभिषेक के दौरान विशेष लय और सुर के साथ रुद्रीपाठ, पुरुषसूक्त पाठ, महामृत्युंजय जप आदि किये जाते हैं। सोमवार भगवान शिव का विशेष महत्त्वपूर्ण दिन है और प्रदोष का दिन बहुत पवित्र माना जाता है। इन दिनों में भक्त भगवान शिव की विशेष आराधना करते हैं।

जब तुम भाव और श्रद्धा के साथ अभिषेक करते हो तो तुम्हारा मन एकाग्र होता है। तुम्हारा हृदय भगवान की छवि और उनसे सम्बन्धित दिव्य विचारों से भर जाता है। तुम अपने शरीर को भूलकर आस-पास के वातावरण से बेखबर हो जाते हो। अहं धीरे-धीरे खत्म होता जाता है। जब विस्मरण का भाव आता है तब तुम आनन्द से भर जाते हो और अन्दर स्वर्गीय आनन्द एवं साक्षात् भगवान शिव की अनुभूति होती है। अभिषेक तुम्हें स्वास्थ्य, संपदा, खुशहाली और समृद्धि प्रदान करता है। लाइलाज बीमारी भी अभिषेक के द्वारा ठीक हो जाती है। यदि तुम किसी बीमार व्यक्ति के लिये रुद्रीपाठ के साथ अभिषेक करते हो तो वह जरूर बीमारी से मुक्त हो जायेगा।

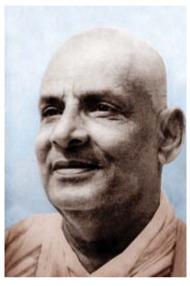
सबसे श्रेष्ठ और उत्तम अभिषेक है शुद्ध प्रेम के जल को हृदय-कमल में स्थित आत्मिलंग पर चढ़ाना। भिन्न-भिन्न उपचारों से बाह्य अभिषेक भगवान शिव के प्रति समर्पण और श्रद्धा के विकास में मदद करेगा, और अन्त में शुद्ध प्रेम का प्रवाह आन्तरिक अभिषेक की ओर ले जायेगा। ■

Shiva's Bounty

Swami Siyananda Saraswati

Blessed aspirants,

Lord Shiva is the God of Love. His grace is boundless. He is the saviour and guru. He is the beloved of Uma. He is Satyam, Shivam, Shubham, Sundaram, Kantam. He is the supreme light that shines in your heart. Meditate on his form. Hear his lilas. Repeat his mantra *Om Namah Shivaya*. Study *Shiva Purana*. Do his worship daily. Behold him in all names and forms. He will bless you with his vision.



Om I bow with folded hands to Lord Shiva, who is the lord of the universe. How merciful he is! How loving and kind he is! He even wears the skulls of his devotees as a garland around his neck. He is an embodiment of renunciation, mercy, love and wisdom. It is a mistake to say that he is the destroyer. Lord Shiva in reality is the regenerator. Whenever one's physical body becomes unfit for further evolution in this birth either by disease, old age or other causes, he at once removes this rotten physical sheath and gives a new, healthy, vigorous body for further quick evolution. He wants to take all his children to his lotus-feet quickly. He desires to give them his glorious 'Shiva-Pada'. It is easier to please Shiva than Hari. A little love and devotion, a little chanting of his panchakshara mantra is quite sufficient to infuse delight in Shiva. He gives boons to his devotees quite readily. How large is his heart!

Lord Shiva is the pure, changeless, attributeless, all-pervading transcendental consciousness. He is the inactive (nishkriya) Purusha. Prakriti is dancing on his breast and performing the creative, preservative and destructive processes. When there is neither light nor darkness, neither form nor energy, neither sound nor matter, when there is no manifestation of phenomenal existence, Shiva alone exists in himself. He is timeless, spaceless, birthless, deathless, decayless. He is beyond the pairs of opposites. He is the impersonal absolute Brahman. He is untouched by pleasure and pain, good and evil. He cannot be seen by the eyes, but he can be realized within the heart through devotion and meditation.

Shiva is also the supreme personal God when he is identified with his power. He is then omnipotent, omniscient active God. He dances in supreme joy and creates, sustains and destroys with the rhythm of his dancing movements. He destroys all bondage, limitation and sorrow of his devotees. He is the giver of *mukti* or the final emancipation. He is the universal Self. He is the true Self of all creatures. He is the dweller in the cremation ground, in the region of the dead, those who are dead to the world. The individual souls and the world originate from him, exist in him, are sustained and rejected by him and are ultimately merged in him. He is the support, source and substratum of the whole world. He is an embodiment of truth, beauty, goodness and bliss.

The name of Lord Shiva chanted in any way, correctly or incorrectly, knowingly or unknowingly, carefully or carelessly, is sure to give the desired result. The glory of the name of Lord Shiva cannot be established through reasoning and intellect. It can be experienced or realized only through devotion, faith and constant repetition of the name and singing his hymns with *bhava*, feeling. When one sings the hymns of Lord Shiva, one is in tune with the Lord. The individual mind melts in the cosmic mind. He who sings the hymns becomes one with Lord Shiva.

केदार की समृतियाँ

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, 1957



केदार के मार्ग में मंदािकनी है, जो परिवर्तनशील नाम-रूप के पीछे अपरिवर्तित चेतना की धारा के समान बहती रहती है। यह अमृतमयी दुग्धधारा है। इसको देखते ही नेत्रों को विश्राम, कर्णों को संगीत, शरीर को शीतलता, हृदय को उल्लास और आत्मा को पवित्रता का वरदान मिलता है। यह अप्रतिहत चंचला अपने यौवन की उमंग में घमण्डी पर्वतों की छाती पर वैसे ही दरार बनाती आ रही है, जैसे मन की मंदािकनी साधुता के घमण्ड को चूर कर जाती है।

मुझे जंगल, पहाड़, सिरता, चन्द्रमा और चलने से प्रेम है। ये मुझे जीवन के सत्य प्रतीत होते हैं। जिसने जीवन में सच्चाई से इस आनन्द और खूबसूरती का मजा नहीं उठाया, वह ईश्वर सृष्टि के माथे का कलंक है। जो केदार नहीं गया, वह काश्मीर का आनन्द कैसे अनुभव करेगा। इसी रास्ते से पाँचों पाण्डव, द्रौपदी व कुत्ते के साथ गये थे ...।

यह मार्ग सनातन है। सबको इस पथ पर चलना होगा। इस जीवन रूपी रात को एक सराय में बितायेंगे, फिर दूसरी सराय खोजेंगे, थोड़ा विश्राम करेंगे, खायेंगे, पीयेंगे, फिर उसे छोड़ कर जाना होगा। जो यात्री इस उतार-चढ़ाव के भय से एक ही सराय में टिके रहना चाहेंगे, उन्हें अवधि व्यतीत हो जाने पर निरादर के साथ निकाल दिया जावेगा।

इसलिए हे यात्री! श्रम सीकर, अंग क्लांति, गरम सूरज, ठण्ढी हवा, भूख और प्यास के बावजूद भी चले चलो, तुम्हारा केदार महापंथ अब करीब है। इसका चप्पा-चप्पा कर्म, कविता और प्रेम के गीत गाता है। यह सड़क जो केदार से मिलने जा रही है, मालूम होता है, चिर-वियोगिनी की तरह अपने इष्ट से मिलने दौड़ रही है। वहाँ तो मुझे भी लगा था कि मैं भी किसी से मिलने जा रहा हूँ।

गौरीकुण्ड समुद्र की सतह से 6000 फुट की ऊँचाई पर हैं। वहाँ गरम पानी का कुण्ड है। आगे 7 मील की चढ़ाई है। चन्द्रमा की शान्त छटा और चिर वियोगिनी पर्वत-राशियों के चिर-द्रष्टा नेत्र मंदािकनी का चिर-किल्लोल प्रेम राग और पथ पर तरु-पल्लवों की खिसकती छाया हमारे मन को अपनी ओर खींचते थे, परन्तु सबसे अधिक आकर्षण था 12750 फुट की ऊँचाई पर रहने वाले 'किसी' का, जो अन्य सुन्दरताओं के खिंचाव को भी कम कर देता था। जबरदस्त चढ़ाई, सब बढ़ते जा रहे थे, मीलों के पत्थरों से भी साथी का पता पूछ रहे थे, उत्तर भी मिला, संकेत भी मिला, फिर आगे बढ़े, ठण्ढी हवा चलने लगी, हृदय का पम्प श्रम का अनुभव करता जा रहा था। पेड़ मस्ती से हँसने लगे थे। केदार का श्वेत हिमांचल मानो मिलने के लिए निकट आने लगा था। सब गधों की तरह कम्बल लादे, अन्धों की तरह लाठी टेकते, लंगड़ों की तरह खिसकते-से 'जय केदार नाथ' का उच्चारण करते बढ़ रहे थे। 10500 फुट, गंगोत्री की ऊँचाई पर पहुँच गये। तीन ओर के शिखर गंगोत्री की तरह खड़े नहीं, ढलुआ हैं। अत: बेशुमार हिम राशि तीनों ओर सोई पड़ी है और शीत गंगोत्री से बहुत अधिक है।

केदारनाथ सामने है, 12750 फुट ऊँचा। तीनों ओर इसके हिममंडित पर्वतों के ढलुआ मैदान, चारों ओर खुली हरीतिमा, संकुलित मैदान, न वृक्ष, न पौधे, एक संन्यासी के सिर की तरह सफाचट! साहस का प्रतीक है यह, मानवता के चिर पोषित आलस्य को चुनौती है केदारनाथ का आह्वान। कोटि-कोटि अहंकार रूपी पशुओं की बिल दी जा चुकी है इसके प्रांगण में। इसके रूप को किसने देखा है? इसका पता कौन जानता है? 'कइरुथा वेद मंत्र मः' क्या वह यहाँ है? इस पत्थर के मंदिर के अंदर कौन देवता छिपा है? इस पत्थर को कौन तोड़ेगा? पशु-स्वभाव-सुलभ क्रूरता के पत्थर को तोड़कर जो इस मंदिर में प्रवेश करेगा, उसे ही वह दिखेगा।

केदारनाथ का शिवलिंग खुरदुरा है। पुरातत्त्व की आलोचक भावनायें कहती हैं कि यह किसी समय किसी की मूर्ति रही होगी, जो किसी कारणवश छेनी के चमत्कारों से बदलकर, वर्तमान लिंग रूप में आ गई होगी। मंदिर की आयु अशोकोत्तरकालीन प्रतीत होती है। इसके दाहिनी ओर दीवाल के पत्थर पर दो शीश खुदे हैं, जिनके कान लम्बे हैं। छाती के भाग को लगता है मांज दिया गया है।

दोपहर से बारिश शुरू हुई, बर्फ गिरने लगी, हवा चलने लगी। पण्डे ने हमें और रजाई-कम्बल दे दिए, एक मोटा कालीन और दरी भी दी, तो भी ठण्ढी – ओह! मैं शाम को पाँच बजे ऊपर चढ़ने लगा, साथ के स्वामीजी नहीं जा सके, श्वास का कोई चारा नहीं था। करीब 500 फुट तक और गया। पर्वत ढलुआ था, पैर रखने को पत्थर भी नहीं मिल पाता था, थूक गिराये नहीं गिरती थी। जूते जमने लगे, हृदय मानो शिथिल होने लगा, ऑक्सीजन कम होती जा रही थी। वहाँ से मंदाकिनी का गर्भ-गृह देखा, स्वर्गारोहण का रोमांचक पथ देखा, ऐसा लगा उछल कर आकाश छू लिया जाए। इतिहासों के साक्षी अनेक हिमशिखरों के दर्शन किये। नयनों को अमृत मिला।

इतिहासों के साक्षी अनेक हिमशिखरों के दर्शन किये। नयनों को अमृत मिला। अन्तर सरोवर से किसी अतीत की स्मृति जागी। जीवन में पहली बार अकारण रोना आ गया। आँखें डबडबाईं, बहने लगीं, हिचिकयाँ आईं। इतने विशाल सौन्दर्य, शान्ति, सिद्धि के देश! आज तू क्या हो गया है! कितना नीचे गिर गया है! तूने मंदािकनी का अमृत पीकर समाज में जहर उगला है, तूने साहस के सनातन शंख को तूती की आवाज समझ लिया है।

भारत वह क्षेत्र है जहाँ से भागवत-सभ्यता का उदय हुआ, मंदाकिनी की धारों, पर्वतों के उतारों, उबड़-खाबड़ पगडंडियों के सहारे से वह उतरी, भारत, अरब, ग्रीस तथा पूरे विश्व में व्याप गई। इसी ने ईसा, बुद्ध, मुहम्मद, महावीर को जगाया, पर आज वह भय से परिपूर्ण गृहस्थों की भावनाओं का नाजायज फायदा उठाने का बहाना बन गयी है। केदार! तूने ही तो हिरण्यगर्भ रूप में वेदों का उच्चारण किया। पर आज तेरे उत्तराधिकारी कहलाने वाले, 'पाँच आना, दस आना, बारह आना,



Memories of Kedar

Swami Satyananda Saraswati, 1957



The river Mandakini keeps on flowing, like the fluid current of consciousness beneath all mutable names and forms. It is verily a river of nectar. Its mere sight gives rest and relaxation to the eyes, music to the ears, coolness to the body, happiness to the heart, and purity and bliss to the soul. This boisterous river, in the exuberance of its youth, has been cutting its way through these proud mountains, just as the Mandakini of the mind pierces through the self-righteous pride of sadhus!

I love the forests, the mountains, the rivers and the moon. I enjoy walking in their presence. To me, they are the real constituents of life. If one hasn't fully enjoyed the joy and beauty of life, one is indeed a blot on this earth. How can one enjoy Kashmir if he hasn't been to Kedar? Upon this very route did the five Pandavas, their wife, Draupadi and a lone dog walk many millennia ago . . .

This path is timeless and eternal. Everyone will have to walk on it sooner or later. Life is like a night spent at a wayside inn. After spending the night there, we will look for another inn and eat, drink and rest there. And soon it will be time to leave that one as well. The traveller who is anxious about this coming and going will want to stay on in the same inn. But once his time is up, he will be booted out.

Therefore, O traveller! Go on walking despite the sweat, the fatigue, the hot sun, the cold wind, the gnawing hunger and the agonizing thirst. Keep on walking, for Kedar, your grand destination, is near. The path leading up to Kedar appears like a damsel rushing headlong to meet her beloved. I also felt like I was going to meet someone special.

Gaurikund, at a height of six thousand feet, has a hot water spring nearby. This is followed by a steep seven-mile climb. The serene moonlight, the silent snow-covered peaks, the gurgling



sounds of the choppy waves of the Mandakini and the shifting shadows of the gently swaying trees on our path kept attracting my attention, but the real centre of attraction was 'someone' inhabiting a place 12,750 feet above sea level, whose beauty and charm made everything pale in comparison. It was a very steep climb. Everyone kept on walking, asking the milestones on the way about the whereabouts of that 'someone'. A hint of an answer came, we moved on, a biting cold wind began to blow, and our hearts began to feel the strain of the climb. The trees began to laugh with the wind. Was the snow-covered expanse of Kedar coming to meet us? Loaded with blankets upon blankets like mountain mules, leaning on sticks like blind men, and hobbling along like lame men,



everyone was somehow dragging himself forward, shouting 'Jaya Kedarnath!' now and then. We reached a height of 10,500 feet, the same as that of Gangotri. The mountain peaks encircling the path on three sides are sloping, not vertical as in Gangotri. That is why these slopes are amply covered with snow and it is much colder than in Gangotri.

Kedarnath is right ahead, 12,750 feet high. Sloping snow-covered mountains cover three of its sides. Not a single tree or shrub is to be seen. Completely bald like the head of a sannyasin! Kedar is a symbol of courage and valour; a challenge to the long-cultivated laziness of mankind. Millions of brutish egos have been sacrificed in its courtyard. But who has really seen His true form? Who knows His whereabouts? Is He really here? Who is the god hidden in this stone temple? Who will break the stones of brutish cruelty and enter the temple? He who does so shall see Him.

The lingam in Kedarnath is rough and jagged. A critical archaeological evaluation suggests that it must have been an idol at some point in time, which for some reason was chiselled into its present shape of a Shivalingam. The temple seems to be from the post-Ashoka period. Two heads are carved on the right wall of the temple. The heads have large ears, and their chests have been chiselled out.

In the afternoon it began raining. Soon the rain turned to snow, and a freezing wind began to blow. The priest gave us additional quilts and blankets, even a thick carpet and a rug, yet the cold was unbearable. I finally came out at five o'clock in the evening and began climbing further. The swami who had come with me couldn't go on, he was having difficulty breathing. I must have gone about five hundred feet. The mountain slope was quite steep and good footholds were hard to find. It was so cold one couldn't even spit. My shoes began to freeze, my heart began to tire out, the oxygen level kept on dropping. From there itself I had a glimpse of the hidden source of the Mandakini, and the fabled path which the Pandavas took to ascend to heaven. These sights sent a thrill of joy though my entire being, and I felt like jumping up to touch the sky.

The towering Himalayan peaks all around have been the silent witnesses of antiquity. All these wondrous sights are nectar for the eyes. A hoary memory from some unknown past suddenly surfaced in the inner lake of my mind. For the first time in life, I cried for no apparent reason.



भगवान और उनके मन्दिर

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

प्राय: देखने में आता है कि जितने भी महत्त्वपूर्ण मन्दिर हैं, वे दुर्गम स्थानों में बनाए गए हैं। ऐसे स्थानों में नहीं, जहाँ स्विधा से सब जा सकें। हिन्दुस्तान में मन्दिरों को ऐसे स्थानों पर बनाने के पीछे क्या कारण है? कोई भी मन्दिर केवल पैसे से नहीं बनता। तुम्हारे पास पाँच-दस लाख रुपये हैं, जमीन भी है, सोचो कि चलो मन्दिर बना दें। नहीं, मन्दिर ऐसे नहीं बनता। जहाँ मन्दिर बनते हैं, वहाँ कोई चुम्बकीय शक्ति होनी चाहिए, कोई ईश्वरीय शक्ति होनी चाहिए। मूर्ति में जो पत्थर होता है, वह भगवान नहीं होता, पर उसके अन्दर कोई शक्ति होती है। जो भी मृर्ति हो, शिवजी, काली माँ या गणेशजी की, उसके अन्दर एक शक्ति होती है। अगर शक्ति है, तो मन्दिर बनाओ। यह मन्दिर बनाने का पहला नियम है।

इस पृथ्वी पर बहुत-सी जगहें ऐसी हैं, जहाँ पर किसी कारण से शक्ति है। हो सकता है किसी जमाने में किसी महात्मा की समाधि रही हो या हो सकता है कभी किसी ने कोई तपस्या की हो या जब भगवान ने अवतार लिया, उस स्थान पर कुछ लीला की हो। कोई कारण होता है जिस वजह से किसी भूमि में दूसरी भूमि की अपेक्षा कुछ अधिक शक्ति होती है। जैसे इन्सान-इन्सान में फर्क मालूम पड़ता है, कोई बहुत बुद्धिमान् होता है तो कोई बहुत बुद्धू होता है, वैसे ही कोई भूमि साधारण होती है और कोई भूमि विशेष। ऐसे विशेष स्थानों पर मन्दिर बनाए





जाते हैं। किसी को विशेष अनुभव होता है और उसको आदेश दिया जाता है कि मिन्दर बनाओ। मुख्यत: तो यह कारण है। एक बात और है। हो सकता है किसी स्थान पर कोई महात्मा रहे, कुछ पूजा-आराधना करते थे, मर गये। अब जिस देवी या देवता की वे पूजा करते थे, वहाँ उनका मिन्दर बन गया। यह एक और कारण है। मिन्दर बनाने के ये मुख्य कारण हुए। उसके बाद होती है ठाकुरबाड़ी। वह कोई भी बना सकता है। उसके लिए कुछ जरूरी नहीं, बस अपने घर में छोटा-सा मिन्दर बना दिया, रोज पूजा-पाठ कर लिया।

मन्दिर एक विशेष स्थान होता है, पर वह व्यक्तिगत नहीं होता। हमारे ही धर्म में नहीं, बिल्क ईसाइयों के गिरजाघर और मुसलमानों के मस्जिद की भी यही पिरभाषा है कि वह व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक स्थान है। उनके यहाँ भी कई गिरजाघर और मिस्जिदें ऐसी हैं, जो किसी सन्त या फकीर के रहने के स्थान पर बनी हैं, जैसे दिल्ली में निज़ामुद्दीन औलिया की है। बिहार शरीफ में ऐसी कई जगहें हैं जहाँ महात्मा रहे, वहाँ मिस्जिद बन गई, लोग नमाज अदा करने लगे।

भारत में जो प्रमुख मन्दिर और आध्यात्मिक केन्द्र हैं, मुख्यत: वे शक्ति के केन्द्र हैं। देवीजी के चौंसठ केन्द्र हुए, शिवजी के बारह। इसके अलावा वैष्णव सम्प्रदाय के अपने स्थान हुए, जैसे द्वारिकाधीश, जहाँ मीराबाई ज्योति में समा गई थी या जहाँ चैतन्य महाप्रभु ज्योति में समा गए। इस प्रकार मन्दिर एक तो पूजा की जगह है और दूसरा, शक्ति को अनुभव करने की जगह भी है।

अब सवाल यह कि ये सब मिन्दर दुर्गम स्थानों में क्यों हैं। लेकिन गौर करो तो कठिनाई कहाँ है? ऋषिकेश से सुबह चलो तो शाम को यमुनोत्री पहुँच जाते हो। आधे दिन का तो सफर है। कहाँ कठिनाई है? आधा दिन तो तुमको यहाँ से कलकत्ता जाने में लग जाता है। और अगर कहते हो कि यह आज की बात है, पुराने जमाने में बात दूसरी थी, तो उस जमाने में यहाँ से कलकत्ते जाना भी उतना ही दुष्कर था। वहाँ पहाड़ चढ़ना पड़ता था तो यहाँ गंगाजी को नाव से पार कर जाना पड़ता था। किठनाई तो सभी के लिए थी। कलकत्ता वालों के लिए बिहार जाना और बिहार वालों के लिए कलकत्ता जाना उतना ही किठन था, जितना ऋषिकेश वालों के लिए यमुनोत्री जाना। चाहे रामेश्वरम् जाओ, गंगोत्री जाओ, कलकत्ता जाओ, किठनाई तो सब जगह थी। और आज सुविधा भी वैसी है। ऋषिकेश से सुबह चार बजे टैक्सी पकड़ो, शाम को छः बजे यमुनोत्री पहुँचो, या गणेश चट्टी में रुक जाओ, दूसरे दिन सुबह यमुनोत्री जाओ, दर्शन करके लौटो, और शाम तक ऋषिकेश पहुँच जाओ। दो दिन में यमुनोत्री की यात्रा। उत्तराखण्ड के चारों धाम पाँच दिन में किए जा सकते हैं फटाफट। तब कैसे कह सकते हैं यह किठन है।

उस जमाने में कठिनाई तो सब जगह थी, केवल यमुनोत्री में नहीं। मध्यप्रदेश के लोग सोमनाथ जाते थे। मीराबाई कहाँ चित्तौड़ से मथुरा-वृन्दावन गई। कितना दूर, कितना कठिन, कितने दिन लगे होंगे उसको, रास्ते में क्या खाया होगा, क्या पिया होगा, कहाँ सोई होगी। पाँच सौ साल पहले की बात है। एक जवान लड़की, राजपरिवार की कुलवधू कैसे पहुँची होगी? कुछ तो कठिनाई हुई होगी न? चित्तौड़ से जरा दूरी नाप के देखो न, वृन्दावन आने के लिए कौन-सा रास्ता है, कितना लम्बा है, कितने दिन लगे होंगे? रेगिस्तान का रास्ता है, ऊँट पर चढ़ कर आना पड़ता है, पैदल चलना पड़ता है, चढ़ाई पर रुकना पड़ता है। कई प्रकार के लोग आते हैं। उसके बाद वृन्दावन छोड़ कर द्वारिका आई, वह तो और भी दूर है। चित्तौड़ से वृन्दावन, फिर वहाँ से द्वारिका, तब बोली – 'गुंजनवन छाड़ी रे, कहाँ जाऊँ धनश्याम।' क्या परिस्थिति हुई कि उसे वृन्दावन छोड़ना पड़ा? इतिहास तो कहता ही नहीं है। इतिहास तो केवल अच्छी-अच्छी, मीठी-मीठी बातें कहता है मीरा के बारे में। मीरा की क्या परिस्थिति थी राजमहल में, क्या परिस्थिति थी वृन्दावन में? गुंजनवन छाड़ी रे, कहाँ जाऊँ धनश्याम – एक थकी हुई, निराश नारी कह रही है कि हे घनश्याम! कहाँ जाऊँ?

यही नहीं, मीराबाई जब सौराष्ट्र में गई, तब उसने सौराष्ट्र की भाषा में भजन गाया, गुजरात में गुजराती भाषा में भजन गाती थी। मीराबाई कई भाषाएँ जानती थी। इतिहास में थोड़े न आता है। मुझे मालूम है, वह हिन्दी, ब्रज, अवधी, पंजाबी, गुजराती, सब जानती थी। मारवाड़ी तो जानती ही थी, उस तरफ की सभी भाषाएँ भी जानती थी। उसने सभी भाषाओं में भजन लिखे हैं –

चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दर्शन पासूं। वृन्दावन की कुंज गलिन में तेरी लीला गासूं, मोहे चाकर राखोजी॥

कठिनाई तो उसको भी आयी। चैतन्य महाप्रभु को कितनी कठिनाई आयी, उनके समय में किसी भी तीर्थ तक पहुँचने के लिए कितनी कठिनाई थी। जो आदमी सत्य का आवाहन 15 सितम्बर-अक्टूबर 2013 कठिनाई न चाहे, वह कहीं जा ही नहीं सकता। सफलता का मार्ग पहाड़ चढ़ने जैसा होता है, सफलता जेब में नहीं रहती। संघर्ष तो सबको करना पड़ता है।

केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि जो तीर्थ हैं, ये एक समय बहुत प्रसिद्ध थे। वहाँ बहुत लोग रहा करते थे, राजे-महाराजे रहते थे, साधु-महात्मा रहते थे। कुमाऊँ और गढ़वाल, केवल ये दोनों उत्तराखण्ड में आते हैं, क्योंकि यहाँ के लोगों का कलेजा दूसरा है और आज भी जितने लोग साधना के लिए, संन्यास के लिए जाते हैं, सब उत्तराखण्ड ही जाते हैं। संन्यास के लिए यहाँ से कोई दक्षिण भारत जाता है क्या? गुजरात या मध्यप्रदेश जाता है क्या? जब भी तुमको संन्यास लेना होगा, क्या सोचोगे? हरिद्वार या ऋषिकेश। जब कभी तीर्थ करने की इच्छा होगी, तुम वहीं जाओगे, क्योंकि गंगाजी जो हैं वहाँ।

गंगा भारत की सुषुम्ना नाड़ी है। ऋषि-मुनियों ने जितने पुराण लिखे, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र या अन्य ग्रन्थ लिखे, सब गंगा के किनारे बैठकर लिखे। शंकराचार्य ने तो साफ लिखा है — भगवित तव तीरे नीरमात्राशनोऽहम् — हे देवी, हे माता, तेरे किनारे बैठ कर, तेरा पानी पीकर, मैं आशीर्वाद लेता हूँ। गंगा में वह शक्ति है कि बुद्धि अच्छी हो जाती है, ब्रह्मसूत्र के विचार, भगवान राम के विचार मन में उत्पन्न होने लगते हैं। वह तो पवित्र भूमि है। वहाँ के राजा लोग साधु-महात्माओं को आश्रय देते थे। आश्रय देने का मतलब यह थोड़े न कि उनकी कन्याओं का शादी-ब्याह करते थे। दिन में दस बजे चार रोटी दे दो, बस। जब हम गंगोत्री जाते थे, खप्पर लेकर जाते थे। किसी के भी दरवाजे पर चले गये, घरवाले दो रोटी और सब्जी दे देते थे, कहीं बैठकर खा लेते थे। बहुत सुन्दर स्थान था वह। यह नहीं कहना चाहिए कि वह दुर्गम स्थान है। कोई चीज दुर्गम नहीं है।

हिमालय एक समय में हरा-भरा और सम्पन्न तो था ही, वह जनसंकुलित राज्य भी था। उसके राजा कौन थे? पार्वती के पिता, हिमालय। पार्वती जी वहीं हिमालय पहाड़ पर पैदा हुई थीं। हमारे यहाँ कुमाऊँ में एक स्थान है, जहाँ पार्वती जी जन्मी थीं। उनके जन्मस्थान को कहते हैं गौरा गाँव। इसलिए हम लोग कहते हैं कि पार्वती जी कुमाऊँ की थीं। कनखल, जो हरिद्वार के बगल में है, वहीं राजा दक्ष ने यज्ञ किया था, जहाँ सतीजी ने अपने को योगागिन में भस्म किया था। यह तो बहुत जनसंकुलित भूमि रही है। आजकल गाँवों के लोग नौकरी के लिए धीरे-धीरे उतरने लगे हैं, बरेली वगैरह शहरों में जाने लगे हैं। बहुत लोग नीचे आ गए तो गाँवों में केवल बूढ़े रह गए।

इतने बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, जिन्होंने इतने बड़े-बड़े शास्त्र लिखे, आखिर उनका कोई पालने वाला तो रहा होगा न। और यह तो पक्की बात है कि जितने बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे गए हैं, उन पर जो टीकाएँ और भाष्य लिखे गए हैं, वे सब हिमालय में लिखे गए। व्यासदेव ने बद्रीनाथ में अपनी कृतियों की रचना की। बद्रीनाथ से थोड़ा आगे सरस्वती के ऊपर शंकराचार्य जी की गुफा है। राम, लक्ष्मण, भरत और



शत्रुघ्न के गुरुकुल कहाँ थे? हिमालय में। ऋषिकेश से सोलह किलोमीटर आगे गंगा किनारे विशष्ठ गुफा है, वहाँ विशष्ठ जी रहते थे। शत्रुघ्न जी मुनि की रेती में रहते थे, शिवानन्द आश्रम के बगल में। भरत जी ऋषिकेश में रहते थे, जहाँ आज शहर है। लक्ष्मण जी रहते थे नदी के उस पार, लक्ष्मण झूले के उस पार। ये सभी राजकुमार अलग-अलग जगहों पर रहते थे। उनकी व्यवस्था थी, वे पढ़ने के लिए जाते थे। उस जमाने में वहाँ बड़े-बड़े गुरुकुल थे। यह आज की बात तो है नहीं। त्रेतायुग, कई हजार साल पहले की बात है। यह कहना कि उस वक्त का मकान आज क्यों नहीं है, यह ठीक नहीं है।

विशष्ठ गुफा में हम एक रात रहे हैं। हम वहाँ अनुभव के लिए नहीं गए थे, केवल देखने के लिए गए थे। रात को वहाँ शेर आता है, बाघ आता है। बाहर आग लगाई, वहीं गंगाजी में स्नान कर लिया। वहीं विशष्ठजी रहते थे।

जो चीज जितनी नजदीक होती है, उसका मूल्य उतना कम होता है। जो चीज दूर होती है, उसका मूल्य बढ़ जाता है। अगर बद्रीनाथ या केदारनाथ बगल में होता तो हम उसके बारे में सोचते तक नहीं। बहुत दूर है, इसलिए बात कर रहे हैं। अति परिचयादवज्ञा – जो चीज अपने पास रहती है, उसका मूल्य कम रहता है, इसलिए दूर रहे तो अच्छा है।

रिखियापीठ, 19/09/1997

Shiva Darshan at Kedarnath, the Himalayas

Swami Niranjanananda Saraswati



In the month of June I went to Kedarnath, the abode of Shiva high up in the mountains, in the Himalayas. It is the last Shiva temple in India. Legend has it that after the Mahabharata war, the Padavas sought Shiva to expunge the sins of the battle. They travelled to Kashi; however, Shiva eluded them and went away to the Himalayas, where he hid in the place that came to be known as Gupta Kashi. The Pandavas

found him, and Shiva now escaped to the Kedar mountains, took the form of a bull and dove into the earth. The Pandavas caught him by his tail and begged him to stay. The great hump of the bull remained in the form of the Kedarnath Shivalingam.

The journey begins

Our story begins on the 10th of June at four o'clock in the morning. Myself, Swami Sivaraj and Swami Satyamurti left Ganga Darshan and we drove to Patna. We took a flight from Patna to Delhi, changed planes and took another flight from Delhi to Dehradun. We landed, got in a car and drove eight hours through the mountains to a place called Sri Nagar. Usually people know of the Sri Nagar in Kashmir; however, in India there have been twelve Sri Nagar cities. These cities were originally founded by Adi Shankaracharya. Through the

length and breadth of India, he established twelve Sri Yantras at various locations and each location was called Sri Nagar. Out of these twelve, ten were destroyed long ago, and only two remain. One temple is in Sri Nagar, the capital of the state of Jammu and Kashmir, and the other in a tiny village in the state of Uttarakhand. However, in the floods of 1977 the temple in Uttarakhand's Sri Nagar was also destroyed. It was in this Sri Nagar that we had our first night's halt.

On the 11th we drove from Sri Nagar to the mid-Himalayan ranges, where there is a chain of towns whose names end with 'prayag': Devaprayag, Rudraprayag and Sonprayag. *Prayag* means confluence, where two or three rivers meet and become one. The most famous prayag is Allahabad, which is also known as Prayagraj. So, after leaving Sri Nagar we crossed the prayags, where different rivers meet and feed into the Ganga. These are all glacial rivers. We arrived at Sonprayag, deep in the mountains. There was nothing there, no transport, no conveniences, just a tiny outpost for pilgrims.

Higher in the Himalayas

From Sonprayag we drove even higher up to Gaurikund where we had to leave our car. Gaurikund is at the base of the Kedarnath mountain. Gaurikund means 'the tank of Gauri': it is Parvati's place. It has a hot water spring where Gauri is believed to have performed tapasya. The water is collected in a tank and people bathe in this *kund*, a natural hot bath. From Gaurikund, pilgrims take horses, or palanquins, or depend on their legs to go to Kedar. When we reached Gaurikund on the afternoon of the 11th, there was a general strike. There were no horses, no porters, nobody. That meant we could not even take our luggage with us. We stayed the night in Gaurikund and at three o'clock in the morning started our walk. We changed our clothes, put on the thermals, sweaters and jackets, and prepared for the mountain climb. We wore as much as we could on our bodies and took a small jhola with our toiletries, and started walking.

This walk was the toughest climb I've done in my life. Mount Kailash was nothing compared to this. It is a hair-raising experience, both going up and coming back down. It was incredibly steep, a sixty-degree climb and more in some places. It was so steep that sometimes we had to use all fours, two hands and two feet. The Himalayas being young mountains meant there was nothing solid to hold on to. Everything was just sand and small pieces of rock. We had to grab rocks and grass, and find footholds, toeholds, even fingernail-holds, just grab something to negotiate the mountain. We would walk a hundred steps and stop for about thirty seconds. We moved very slowly. If we moved fast, we were exhausted after ten steps. The muscles would begin to scream, "No more, get down!" We covered about one kilometre in fifteen minutes and we had to journey sixteen kilometres, an average of four kilometres per hour. It was a very slow, tedious and intense movement, and due to the exertion and the rarefied atmosphere, all were breathless.





Our next stop was Rambara, and from this halfway point we got on horses. That was some relief as the going gets even tougher after Rambara. There are some footpaths; however, they are very steep and narrow, but mules and horses can navigate their way through them easily. It was raining and slushy, and with the horse manure on the road, it was a slippery affair. We had to be watchful of every step to ensure that we did not slip at all, and in the slush that became almost impossible.

On the 12th, we reached Kedarnath by 11 am, eight hours of climbing and horse-riding. It took us eight hours to negotiate sixteen kilometres.

In the abode of the lord of mountains

At Kedarnath, the temperature was about minus three or four degrees on the day we arrived. In the guesthouse where we stayed, there was no heating or hot water. Fortunately, there were enough blankets to wrap ourselves in and hot liquids to keep warm.

After settling in, we made the rounds to see the area, to get to know the people, to become familiar with what was available, such as where to have tea and where to have meals. At 1 pm we went to the temple to locate the place where I would sit for the three-day anushthana. We found a very nice spot beside the temple in a yajnashala, where the havans for the temple are performed. Every day we sat there with our asanas, malas and photos, and did what we came to do.

I was to have three darshans, one on each day. The evening arati on the day we arrived was my first darshan. We three sannyasins along with Natwar Rateria, our sponsor, were about six feet away from the main Shivalingam, which is very different from the usual, oval Shivalingams. The Shivalingam in the Kedarnath temple is a huge, triangular rock, which looks like the hump of a bull, protruding from the ground. It is massive, about six feet by four feet, and is simply magical. We sat in front of it and the pandit started chanting the *Shiva Mahimna Stotra*. As we knew the stotra, we also chanted along with full gusto.

The first day we were at the temple for about forty minutes, during the whole chanting and the arati. What a beautiful arati! The pandit performing the arati was moving like a dancer, holding the lamp in his hands and moving them in an elaborate and beautiful manner, accompanied by the chanting of mantras. He started the arati first with incense, waving it in a dance-like movement, using hand mudras. Then he lit a single flame, then a double flame, then a triple flame, he kept increasing the number of flames until it came to eleven. These eleven flames represented the eleven aspects of Shiva. Finally, he took the big, pyramid-style lamp, and performed the arati with that, illuminating the entire sanctum sanctorum.

Darshan and grace

There were various visions and experiences throughout the trip. One was during the chanting of the mantras during the arati. I saw the face of Shiva while I was doing trataka on

the massive lingam. I saw Swami Sivananda in Shiva's right eye, Swami Satyananda in the left eye and a form of Devi above in his third eye. Forming the nose, I saw two people in shashankasana: myself and Swami Satsangi. The left side of his mouth was formed by Ganga Darshan, the right side by Rikhiapeeth and the centre by Sannyasa Peeth. I heard a voice saying, "I'm with all of you," which I understood to be Shiva's voice. It was a very vivid first day's experience.

The next morning, I did the Katyayani chanting along with japa in the guesthouse room from five until seven o'clock. Breakfast followed and at nine o'clock, we went to the temple. There, we spread out our wings and from nine until twelve, performed the anushthana. Swami Satyamurti was an assistant; he brought tea when needed and asked people for quiet, or for more space when they crowded around. Swami Sivaraj also managed the people and looked into other requirements.

In the afternoon of the second day, Swami Sivaraj had an experience. He asked if he could go about seven kilometres further up the mountain where there is a cave. I told him, "Don't go to the cave. There is a lake four kilometres away; go there." It is known as Brahma Sarovar, the lake of Brahma. It's a glacial lake and the beauty and the pristine quality of nature in that area is amazing. On his way to Brahma Sarovar, he had to cross a stream. The only way to do this was by removing all footwear, putting the feet down in freezing glacial waters, and sliding on the toes across the bottom. If you lift the feet, you would be swept away. You have to crawl on the toes, half an inch at a time, and by the time you have walked five steps, the legs have turned blue from the cold and you can't feel them any more. You become totally disoriented as to where the feet and legs are. If you lift a leg to look, you lose balance. Swami Sivaraj had a close encounter with death there. However, he invoked Lord Hanuman and jumped over rocks and somehow came through. When he returned, he was absolutely shaken by the experience.

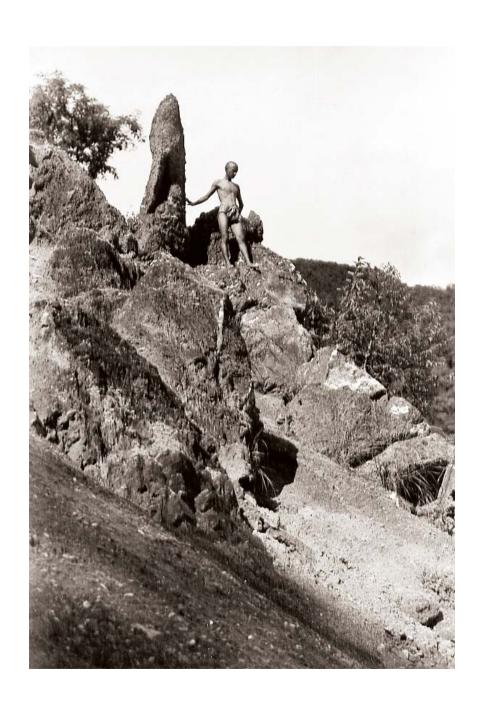
In the evening, I did my anushthana inside the sanctum sanctorum and then the chanting started in there. The pandits

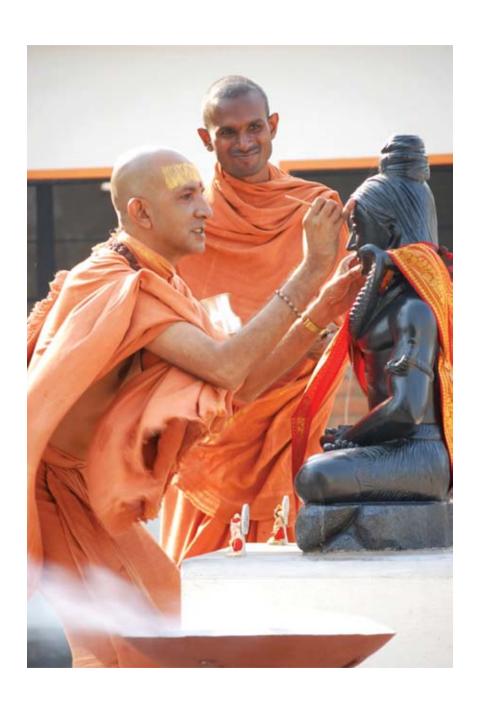


chanted *Lingashtakam*, *Shiva Sahasranama Stotram* and *Uma Maheshwara Stotram*, and we also participated in the chanting. When the chanting was finished, in full voice, I sang the *Shiva Stuti*. The pandit was perhaps a little surprised but kept quiet and the sanctum sanctorum echoed with this offering to Shiva.

A destined encounter

That night I had a dream and told Swami Sivaraj the following morning, "A sannyasi is going to come and I have to see him." It was close to eleven-thirty on this third day and I was performing my anushthana when there was a huge commotion. A very important sannyasi was at the temple and I knew he was the one I had to see. I told Swami Sivaraj, "Go and see if he has some time." When the sannyasi saw Swami Sivaraj he said, "I saw you twenty years ago. You are a disciple of Swami Satyananda." Swami Sivaraj said, "Yes, and Swami Niranjan has also come; he is doing his anushthana. He is sitting over there." By that time I had gotten up to meet the sannyasi and





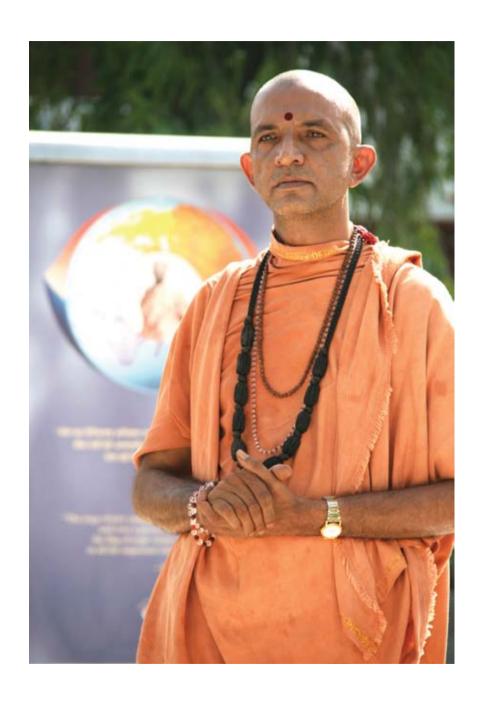




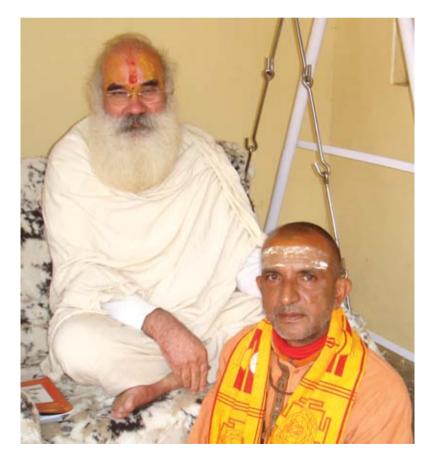








he said to me, "Yes, I know, you succeeded Swami Satyananda many years ago. How is Swamiji?" I told him that Swamiji attained mahasamadhi in 2009. When he heard this, he stood rock-still. He closed his eyes and for about thirty seconds remained quiet. Then he said, "He was a siddha. Nobody at present compares to the attainments of Swami Satyananda and although it is a loss, a physical loss, his work will go on flawlessly." Then he said to me, "Come to my ashram and we'll talk there." The sannyasi's name was Swami Ramananda and he is a very great siddha himself who has lived in Kedarnath for twelve years in snow and ice as an avadhoota, doing his tapasya.



I finished my anushthana, and then the three of us, myself, Swami Sivaraj and Swami Satyamurti went to the sannyasi's ashram 2.5 kilometres downhill from Kedarnath. We managed to reach it in about thirty minutes. We spoke with Swami Ramananda for about an hour and he gave many insights into the path that I am following. He spoke about Swami Sivananda and Sri Swamiji. He mentioned that he had gone to South Africa last year and had seen the work that a disciple of Swami Sivananda had done and was very impressed. Swami Ramananda stated that people don't realize it, but Swami Sivananda was one person whose disciples are shining globally. No guru has had so many disciples who have excelled. He said, "He was the guru of the age. Whoever he touched, shone. Not every guru has that opportunity or ability. Maybe they can prepare one disciple, with a lot of effort. Swami Sivananda had so many exceptional disciples throughout the world, and each one was a luminary in their own right, each one was a jewel in their own right."

Swami Ramananda said many things about Sri Swamiji. He said that Sri Swamiji had touched every aspect of life: every type of karma, every type of dharma and every type of sadhana. He did not leave anything untouched. Sri Swamiji involved himself in all aspects of life, from karma to dharma to sadhana to service, to enlightenment. He said, "There is nothing I can think of that he has not completed in his life." Swami Ramananda had very loving sentiments for Swami Sivananda and Swami Satyananda.

It took us two hours to travel the 2.5 kilometres back up the mountain, less than one kilometre per hour. We returned to our guesthouse at five o'clock and I immediately went to the temple to sit with the nagas and the sadhus who were there.

Offering and receiving

At six o'clock, we went in again. This was my last darshan; I took everything of pooja with me, including an invitation to the convention. I gave it to the pandit and he placed it on the

lingam. After the arati and spending two hours in the temple, we went back to our guesthouse to have some hot soup and warm up. We did a quick yoga nidra and at 11 pm, we were back in the temple. My last offering was to perform an abhisheka at midnight, during which I was just a few inches away from Him, a privilege usually not allowed.

Now, at this altitude, there are no flowers, no grass, no trees, nothing grows there. They use cloth or plastic flowers for adorning Shiva. I telephoned Delhi and requested the Bhaskar family, who were joining us on the pilgrimage, to bring flowers, bael patra, the clothes for sringara, and all other items needed for the abhisheka. The pandit allowed the six of us inside the sanctum sanctorum. I made four groups out of our people: one group would do the abhisheka on behalf of Ganga Darshan Vishwa Yogapeeth, one group would do it on behalf of Rikhiapeeth, one group would do it on behalf of Sannyasa Peeth, and one group would do it on behalf of all the people who are connected with Sri Swamiji. We sat in the four different corners and took our sankalpa: "This is for Ganga Darshan Vishwa Yogapeeth", "This is for Rikhiapeeth", "This is for Sannyasa Peeth", "This is for all the people connected with Sri Swamiji, yoga and associated with us." After many moons, the temple abhisheka was performed with real flowers. One thousand and eight names of Shiva were chanted, and with each name, one bael patra and one lotus flower was placed on the lingam. We decorated it beautifully. We put all our malas on Shiva. All the photos I had of Sri Swamiji and of Swami Sivananda and the small Shivalingam I had, were placed on Him. We had purchased some pictures of Sri Kedarnath, and they were also placed on the Shivalingam during the abhisheka. It was absolutely beautiful. We finished by midnight.

After the conclusion of the abhisheka, we returned to our guesthouse and I said, "There is nothing more to do here. Tomorrow morning at six, we will leave." We went to bed around one-thirty and woke up at three-thirty. We packed



what we had and started moving at six o'clock. By twelve noon we reached Rambara.

In a protective cocoon

As we arrived in Rambara, there was a cloudburst slightly higher up on the mountain and the rain started to pour. We continued to travel down the mountain and when we arrived in Gaurikund, there was a landslide above us and the village of Rambara, which we had just come from, was wiped away. We left Gaurikund and came to Sonprayag, and the Gaurikund bridge was wiped away. Twenty cars fell in the gorge. Landslides were occurring continuously in the areas we had just left.

We travelled down to Rudraprayag. We stayed there overnight and at six o'clock on the morning of the 16th, I said, "We will leave this place now." Sometime later, the hotel beside the riverbank where we had stayed, was destroyed. We reached Rishikesh and spent the night there. I could see the

river water rising. The next morning, on the 17th, I opened a window of the hotel and the houses on the banks of the Ganges were almost under water.

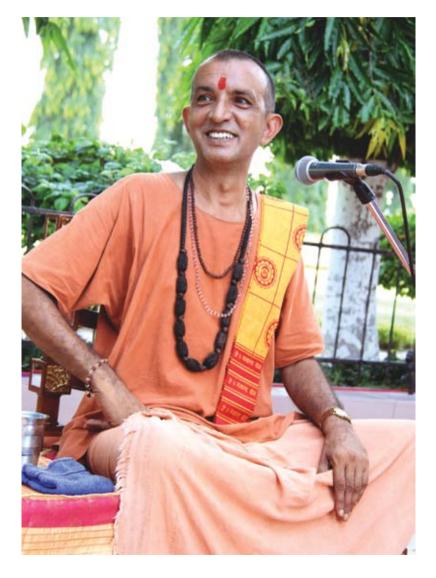
We were hours ahead of all these disasters. In one day, we saw about 150 landslides. It was like the movie 2012: the catastrophe was taking place behind us and we were just ahead of it in our car. From the rearview mirror, we could see mountains collapse, roads and villages being swept away. While all this devastation was taking place, we were moving with absolutely no anxiety, fear or panic. We were completely relaxed, tension-free, eating, drinking and singing. It was as if we were being carried in the hands of some higher power and taken through the most impossible odds. There were huge boulders on the road, yet we always found just enough space to get around them. We played the Hanuman Chalisa and it felt as if the car was in Hanumanji's hand, and all barriers were overcome easily. One person even said that it was as if we were surrounded by a protective cocoon, surrounded by an invisible force field.

Message of Shiva

The message of Kedarnath was, "Believe in Me." Shiva was saying, "You have had your darshan, now you should go, as I am going to change everything." I was practically the last person to perform abhisheka in Kedarnath. I feel very grateful that we had the opportunity to go to Kedarnath. People will not be able to visit for many years now. Only the temple peak survives. Everything else is under ten or twelve feet of slush.

Shiva lived up to his reputation on this trip to Kedarnath. He showed his Rudra aspect. Deep inside, I believe he was waiting to give me his darshan; I do have a strong feeling that he was waiting to give me the darshan before changing everything.

As an individual and as a pilgrim who had gone for a specific purpose, a specific reason, all was attained without any struggle or difficulty on our part and grace was in abundance. It was an incredible experience overall, to undergo the extremes: satisfaction in the sadhana and distress for the devastation. With deep appreciation, I left Kedarnath with a sense of fulfilment, happiness and contentment; sadness for others, yet a sense of deep achievement. What I had gone for was achieved.



केदारनाथ में शिव दर्शन

रवाभी निरंजनानन्द सरस्वती

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रै:। सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यै: केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥

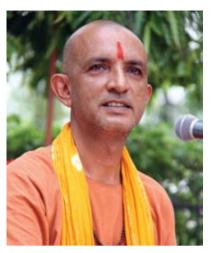
इस वर्ष जून के महीने में हम हिमालय के ऊँचे शिखरों में बसे भगवान शिव के एक परम पावन धाम गए थे। भारत का यह अंतिम शिवालय, केदारनाथ के नाम से जाना जाता है। पुराणों में कहानी आती है कि महाभारत युद्ध के बाद जब पाण्डव युद्ध के पापों का प्रायश्चित्त करने भगवान शिव की खोज में निकले, तो सबसे पहले वे काशी गए, लेकिन उन्हें आता देख भगवान शिव वहाँ से गायब हो गए और हिमालय में आकर एक ऐसे स्थान में छिप गए, जो बाद में गुप्त काशी कहलाया। जब पाण्डवों ने अंतत: उन्हें ढूँढ निकाला, तो वे एक बैल का रूप धारण कर केदार पर्वतशृंखला की ओर निकल गए और वहाँ धरती में घुस गए। पाण्डवों ने किसी तरह उनकी पूँछ पकड़ ली और उनसे वहाँ रहने की प्रार्थना की। भगवान शिव ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया, और उनके वृषभ-देह का कूबड़ वहीं केदारनाथ शिवलिंग के रूप में रह गया।

यात्रा की शुरुआत

हमारी यात्रा 10 जून को सबेरे 4 बजे प्रारम्भ हुई। स्वामी शिवराज एवं स्वामी सत्यमूर्ति के साथ हम गंगादर्शन से पटना के लिये रवाना हुए। पटना से दिल्ली तक और फिर दिल्ली से देहरादून तक हमने हवाई यात्रा की। देहरादून में विमान से उतरकर कार में बैठे और पहाड़ों की घुमावदार सड़कों पर चलते हुए आठ घण्टे बाद श्रीनगर नामक स्थान पर पहुँचे।

यह नाम सुनकर लोग प्राय: काश्मीर के श्रीनगर का अंदाज लगाते हैं, लेकिन वास्तव में भारत में बारह श्रीनगर रहे हैं, जिनकी स्थापना आदि शंकराचार्य ने की थी। उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों पर बारह श्रीयंत्रों की स्थापना की और प्रत्येक स्थान श्रीनगर कहलाया। बारह में से दस तो काफी समय पहले ही नष्ट हो गए। अब मात्र दो बचे हैं, जिनमें से एक जम्मू एवं काश्मीर की राजधानी है और दूसरा उत्तराखण्ड राज्य का एक छोटा-सा कस्बा है। यहाँ का मंदिर भी सन् 1977 में बाढ़ की चपेट में आने से नष्ट हो गया था। 10 जून की रात का हमारा प्रथम रात्रि पड़ाव इसी श्रीनगर में हुआ।

11 जून को हमने श्रीनगर से हिमाच्छादित पर्वतमालाओं की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में अनेक ऐसे नगर-ग्राम आए, जिनके नाम के अंत में 'प्रयाग' जुड़ा है, जैसे



देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग और सोनप्रयाग। इन स्थानों पर प्राय: दो या अधिक नदियाँ आकर मिल जाती हैं। इलाहाबाद का प्रयागराज तो विश्वप्रसिद्ध है। श्रीनगर से निकलकर हम अलग-अलग प्रयागों से गुजरते गए, जहाँ विभिन्न नदियाँ आकर गंगा जी में मिल जाती हैं। इन सब नदियों के उद्गम हिमालय की ऊँचाइयों में स्थित ग्लेशियर हैं। दोपहर तक हम सोनप्रयाग पहुँचे। यहाँ कोई विशेष सुविधा उपलब्ध नहीं है, बस तीर्थयात्रियों के मार्ग में एक छोटा-सा पड़ाव है।

हिमालय के उत्तुंग शिखरों की ओर

सोनप्रयाग से निकलकर हम और अधिक ऊँचाई पर स्थित गौरीकुण्ड पहुँचे, जहाँ अपनी मोटरगाड़ी छोड़नी पड़ी। गौरीकुण्ड वह स्थान है जहाँ से भगवान केदारनाथ के दर्शनाभिलाषी अपनी पैदल यात्रा का श्रीगणेश करते हैं। गौरीकुण्ड में गर्म जल का एक स्रोत है, और लोगों की मान्यता है कि इसके पास ही माँ गौरी ने तप किया था। इस कुण्ड के गर्म जल में तीर्थयात्री यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व स्नान करते हैं। और घोड़े या पालकी पर सवार होकर या फिर पैदल ही केदारनाथ की ओर बढ़ते हैं।

11 जून को दोपहर बाद जब हम गौरीकुण्ड पहुँचे तो जानकरी मिली कि उस दिन वहाँ हड़ताल थी। न घोड़े उपलब्ध थे, न ही कुली। अपने सामान को वहीं पर छोड़ने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं था। हमने वह रात गौरीकुण्ड में ही बिताई और सबेरे 3 बजे से हमने चढ़ाई प्रारम्भ की। शरीर पर जितने थर्मल, स्वेटर और जैकेट ओढ़ सकते थे, उतने पहनकर और कंधे पर एक छोटा झोला लटकाकर हमने चलना शुरू कर दिया।

यह जीवन की सबसे कठिन चढ़ाई साबित हुई। कैलास-मानसरोवर की यात्रा तो इसके सामने कम्पनी-बाग की सैर थी। खड़ी ढलान पर चढ़ाई और उतराई, दोनों में रोंगटे खड़े हो जाते हैं। रास्ते में कई ऊँची, खड़ी चट्टानें आती हैं, जिनपर चढ़ने के लिए दोनों पैर ही नहीं, दोनों हाथ भी इस्तेमाल करने पड़ते हैं। अन्य पर्वतशृंखलाओं की तुलना में हिमालय नए पर्वत हैं, जहाँ मजबूत चट्टानें कम, मिट्टी और पथरीली रेत ज्यादा है। ऊपर चढ़ते समय हाथों के लिए पकड़ने लायक कुछ भी नहीं मिलता था। कहीं घास को पकड़ते, तो कहीं किसी छोटे-से शिलाखण्ड को। किसी तरह पंजों, हाथों, यहाँ तक कि नाखूनों को दरारों में फँसाते-निकालते

हम आगे बढ़ते गए। सौ कदम चढ़ते फिर लगभग आधा मिनट रुकते। कछुए-सी मंथर गित थी हमारी। गित जरा भी तेज करते तो दस कदम के बाद पस्त हो जाते। हमारे पैरों की पेशियाँ हमसे बगावत करने पर उतारू हो जातीं। एक किलोमीटर की दूरी हमने किसी तरह आधे घण्टे में तय की। कुल सोलह किलोमीटर की यात्रा पूरी करनी थी। याने आठ घण्टे! बहुत ही धीमी और थका देने वाली चाल थी हमारी। एक तो पेशियों की थकान, ऊपर से वायुमण्डल में ऑक्सीजन की कमी। कुछ एक कदम चलने के बाद हम सभी हाँफने लगते थे।

हमारा अगला पड़ाव रामबाड़ा था, जो गौरीकुण्ड और केदारनाथ के ठीक बीचोबीच है। यहाँ से घोड़ों पर यात्रा शुरू होने वाली थी। घोड़ों पर बैठकर हमने चैन की साँस ली क्योंकि आगे का रास्ता अधिक चुनौतीपूर्ण था। पहाड़ों पर संकरी पगडंडियाँ बनी हैं, जिनपर आदिमयों का चल पाना तो मुश्किल है, पर पहाड़ी खच्चर और घोड़े उन पर आसानी से चढ़ जाते हैं। रास्ते में बारिश भी हो रही थी। बारिश के पानी और घोड़ों की लीद से रास्ते पर फिसलन का होना स्वाभाविक था। पग-पग पर चौकन्ने रहकर किसी तरह इस कीचड़ भरे फिसलन को पार किया। 12 जून को हम प्रात: 11 बजे केदारनाथ पहुँचे। पैदल चलते और घुड़सवारी करते हुए हमने सोलह किलोमीटर की दूरी आठ घण्टों में तय की थी।

केदारनाथ धाम

उस दिन केदारनाथ में तापमान शून्य से चार-पाँच डिग्री नीचे था। जिस गेस्ट हाऊस में हम ठहरे, वहाँ न हीटर था, न गर्म पानी की व्यवस्था। कम्बल जरूर मिल गए, जिनमें अपने आपको लपेटकर और गर्म चाय वगैरह पीकर हम ठण्ढ का सामना करने लगे।





थोड़ी देर विश्राम करने के बाद हम आस-पास के स्थानों और लोगों की जानकारी लेने निकल पड़े। दोपहर के एक बजे हम अपने अनुष्ठान के लिए उपयुक्त स्थान खोजने केदारनाथ मंदिर गये। मंदिर के पास यज्ञशाला में एक सुन्दर स्थान मिल गया, जहाँ मंदिर के हवन सम्पन्न किये जाते थे। प्रतिदिन हम वहीं अपना आसन जमाकर अनुष्ठान करते थे।

उस दिन संध्या आरती के समय भगवान केदारनाथ के प्रथम दर्शन हुए। हम तीन संन्यासी और हमारे प्रायोजक, श्री नटवर रतेरिया, मुख्य शिवलिंग से करीब छ: फीट की दूरी पर खड़े थे। वह शिवलिंग सामान्य अण्डाकार शिवलिंगों की भाँति नहीं है। केदारनाथ का शिवलिंग एक विशाल, त्रिभुजाकार शिलाखण्ड है जो बैल के कूबड़ की तरह दिखता है। लगभग छ: फीट लम्बा और चार फीट चौड़ा यह शिवलिंग सभी मायनों में अद्भुत है। हम विस्मित-से उसके समक्ष बैठ गए और पण्डितों ने शिव महिम्न: स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ किया। हम लोग यह स्तोत्र जानते थे, इसलिए हम भी सस्वर साथ देने लगे।

प्रथम दिन मंदिर में आरती एवं स्तोत्रपाठ में लगभग चालीस मिनट लगे। आरती के बारे में तो जितना कहा जाए, कम है। आरती करने वाले पण्डित जी एक नर्तक की तरह हस्तमुद्राएँ अभिव्यक्त कर रहे थे। बड़े ही सुन्दर और मनोहारी ढंग से वे मंत्रोच्चार के साथ आरती दिखा रहे थे। आरती की शुरुआत धूप-अगरबत्ती से हुई, जिसे उनकी हस्तमुद्राओं ने नृत्य का स्वरूप दे दिया। फिर एक-के-बाद-एक कुल ग्यारह दीपशिखायें प्रज्ज्वलित कीं जो एकादश रुद्रों का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।

अंत में उन्होंने एक बड़े पिरामिड आकार के दीपक से आरती सम्पन्न की। उस दीपक की अलौकिक आभा से सारा गर्भगृह आलोकित हो गया।

दर्शन और अनुग्रह

इस तीर्थयात्रा के दौरान हमें अनेक दिव्य दर्शन और अलौकिक अनुभव हुए। एक अनुभव आरती के दौरान हुआ। उस विशाल शिवलिंग पर त्राटक करते समय हमें साक्षात् भगवान शिव का मुखमण्डल दिखाई दिया। उनके दायें नेत्र में स्वामी शिवानन्द जी, बायें नेत्र में स्वामी सत्यानन्द जी और ऊपर तीसरे नेत्र में साक्षात् देवी माँ के दर्शन हुए। नासिकाओं के स्थान पर शशांकासन में लेटे दो व्यक्तियों को देखा। उनमें से एक हम थे और दूसरी स्वामी सत्संगी। शिव जी के मुख के बायीं ओर गंगादर्शन, दायीं ओर रिखियापीठ और मध्य में संन्यास पीठ की स्पष्ट झलक दिखलाई दे रही थी। 'मैं तुम सबके साथ हूँ' – मेरे अन्तरतम में गूँजी यह गंभीर ध्वनि स्वयं भगवान शिव की वाणी थी। प्रथम दिवस की यह बहुत ही स्पष्ट और गहन अनुभृति थी!

अगले दिन सबेरे 5 से 7 बजे तक हमने अपने कमरे में माँ कात्यायनी के स्तोत्रों एवं मंत्रों का पाठ किया। नाश्ता करके 9 बजे हम मन्दिर गये। वहाँ अपना आसन बिछाकर 9 से 12 बजे तक हमने अपना अनुष्ठान सम्पन्न किया। स्वामी सत्यमूर्ति ने सहायक की भूमिका निभाते हुए हमारी सभी आवश्यकताओं का तत्परता से ध्यान रखा। स्वामी शिवराज भी इसमें अपना पूर्ण सहयोग दे रहे थे।

दूसरे दिन दोपहर के समय स्वामी शिवराज के साथ एक विशेष घटना घटी। जब हम अनुष्ठान कर रहे थे तब उन्होंने सात किलोमीटर आगे स्थित एक गुफा तक जाने की अनुमित माँगी। हमने कहा, 'वहाँ मत जाओ। चार किलोमीटर की दूरी पर एक झील है, वहाँ चले जाओ।' ब्रह्म सरोवर नामक उस झील की सुन्दरता और प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है।

ब्रह्म सरोवर के मार्ग में एक नदी को पार करना पड़ता है। उसके लिये अपने जूते उतारकर, उस बर्फीले पानी में पैर रखकर अपने पंजों के बल धीरे-धीरे आगे सरकना पड़ता है। अपने पैरों को तुम उठा नहीं सकते, नहीं तो धार में बह जाओगे। पंजों को धीरे-धीरे रेंगते हुए आगे बढ़ना होता है। चार-पाँच कदम आगे बढ़ते ही पैर ठण्ढ से नीले पड़ जाते हैं और एकदम सुन्न हो जाते हैं। आदमी चकरा जाता है कि उसके पैर और पंजे आखिर गए कहाँ! पैरों का अनुभव करने के लिये अगर किसी पैर को जरा-सा भी उठाओगे तो संतुलन खो दोगे और नदी की धार तुम्हें बहा ले जाएगी। उसी नदी पर स्वामी शिवराज मृत्यु से बाल-बाल बचे। हनुमान जी का आवाहन करके वे चट्टानों के ऊपर कूदे और किसी तरह बच निकले। जब वे लौटे तो स्पष्ट नजर आ रहा था कि वे काल के साथ हुई उस अकाल भेंट से पूरी तरह हिल चुके हैं!

शाम को हमने मंदिर के गर्भगृह में अपना अनुष्ठान सम्पन्न किया और उसके बाद वहाँ स्तोत्रपाठ और मंत्रोच्चार शुरू हुआ। पण्डितों ने *लिंगाष्टकम्, शिव सहस्रनाम स्तोत्रम्* और *उमा महेश्वर स्तोत्रम्* का पाठ किया और हमने भी उनका साथ दिया। इसकी समाप्ति पर हमने ऊँचे स्वर में शिव स्तुति का पाठ किया। पण्डितों को थोड़ा आश्चर्य जरूर हुआ पर वे गर्भगृह में गूँजती इस शिव-श्रद्धांजलि को श्रद्धापूर्वक सुनते रहे।

स्वप्न-निर्दिष्ट भेंट

उस रात हमने एक स्वप्न देखा और अगली सुबह स्वामी शिवराज से कहा, 'आज एक संन्यासी यहाँ आयेंगे, उनसे हमें भेंट करनी है।' प्रात: 11.30 बजे जब हम अनुष्ठान में तल्लीन थे तब मंदिर की दिशा से कुछ शोरगुल सुनाई दिया। एक प्रतिष्ठित संन्यासी मंदिर में अभी-अभी आए थे, और हम जान गये कि हमें इन्हीं से भेंट करनी है। हमने स्वामी शिवराज से कहा, 'जाकर पता लगाइये कि उनके पास मिलने का समय है क्या।' जब कथित संन्यासी ने स्वामी शिवराज को देखा तो उन्होंने कहा, 'मैंने तुम्हें बीस वर्ष पूर्व देखा था। तुम स्वामी सत्यानन्द जी के शिष्य हो न?' स्वामी शिवराज बोले, 'जी हाँ, स्वामी निरंजन भी मेरे साथ हैं। वे इस समय वहाँ बैठकर अनुष्ठान कर रहे हैं।'

इस बीच उनसे मिलने हम भी उठकर आ गये थे। उन्होंने हमसे कहा, 'हाँ, मैं आपको जानता हूँ। बहुत वर्ष पहले ही स्वामी सत्यानन्द जी ने आपको अपना उत्तराधिकारी बना दिया था न। स्वामीजी कैसे हैं?' जब हमने उन्हें श्री स्वामीजी की महासमाधि के बारे में बताया, तो वे एकदम निश्चल हो गये। आँखें बन्द कर कुछ क्षणों के लिये वे मौन रहे। तत्पश्चात् वे बोले, 'स्वामी सत्यानन्द जी सिद्ध पुरुष थे। वर्तमान में ऐसा कोई नहीं जिसकी तुलना उनसे और उनकी उपलब्धियों से की जा सके। उनके भौतिक प्रस्थान से हुई क्षित को तो पूरा नहीं किया जा सकता, लेकिन फिर भी उनका कार्य निर्बाध रूप से चलता रहेगा।' उन्होंने आगे कहा, 'हमारे आश्रम आइये, वहीं बातचीत करेंगे।' उनका नाम स्वामी रामानन्द था और वे स्वयं एक पहुँचे हुए सिद्ध हैं, जो केदारनाथ की बर्फीली ऊँचाइयों में अवधूत की तरह रहते हुए बारह साल तपस्या कर चुके हैं।

हमने अपना अनुष्ठान समाप्त किया और उसके बाद हम तीनों संन्यासी स्वामी रामानन्द जी के आश्रम की ओर चल पड़े जो केदारनाथ से ढाई किलोमीटर नीचे था। आधे घण्टे में हम वहाँ पहुँच गये, और स्वामी रामानन्द जी के साथ लगभग एक घण्टे तक बातचीत की। साधना और तपस्या के जिस मार्ग पर हमने कदम बढ़ाया है, उसके अनेक सूक्ष्म पहलुओं पर उन्होंने प्रकाश डाला। साथ ही स्वामी शिवानन्द जी और स्वामी सत्यानन्द जी के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने बतलाया कि पिछले वर्ष वे दक्षिण अफ्रीका गये थे, जहाँ स्वामी शिवानन्द जी के एक शिष्य



के कार्य को देखकर वे बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने आगे कहा, 'लोग भले ही इस बात को न जानें लेकिन स्वामी शिवानन्द जी बीसवीं सदी के महानतम गुरु रहे हैं, जिनके शिष्य दुनियाभर में चमक रहे हैं। आज के युग में ऐसा कोई गुरु नहीं, जिसने इतनी बड़ी संख्या में इतने उच्च स्तर के शिष्य तैयार किए हों। सचमुच वे युगगुरु थे। जिसको भी उन्होंने स्पर्श किया वह चमक उठा। अन्य गुरुओं को न तो ऐसा अवसर मिलता है, न ही उनमें ऐसी विलक्षण क्षमता होती है। बहुत मेहनत से शायद वे ऐसे उच्च कोटि के एक-आध शिष्य ही तैयार कर पाएँ। लेकिन स्वामी शिवानन्द जी के पूरे विश्व में ऐसे कई असाधारण शिष्य-रत्न हैं जो अपने प्रकाश से संसार को प्रदीप्त कर रहे हैं।'

स्वामी रामानन्द जी ने श्री स्वामीजी के बारे में भी बहुत कुछ बतलाया। उन्होंने कहा, 'स्वामी सत्यानन्द जी ने जीवन के हर पहलू, हर आयाम को स्पर्श किया। वे हर प्रकार के कर्म, हर प्रकार के धर्म, हर प्रकार की साधना और हर प्रकार की सेवा में संलग्न हुए। उनसे कुछ भी अछूता नहीं रहा। मेरे विचार से ऐसा कुछ नहीं जो उन्होंने अपने जीवन में साधा न हो।' उनके व्यवहार और वार्तालाप से ही स्पष्ट था कि स्वामी शिवानन्द जी एवं श्री स्वामीजी के प्रति उनमें कितनी आत्मीयता और प्रेम था।

ढाई किलोमीटर की चढ़ाई वापस चढ़ने में हमें दो घण्टे लगे। हम पाँच बजे अपने गेस्ट हाऊस पहुँचे और वहाँ से तुरन्त मंदिर की ओर निकल गए जहाँ हमने नागा संन्यासियों और अन्य साधु-महात्माओं के साथ कुछ समय व्यतीत किया।

अर्पण और अनुग्रह

छ: बजे हम दर्शन के लिए पुन: गर्भगृह गए। यह हमारा अंतिम दिन था। हम अपने साथ पूजा-अर्चना का सारा सामान ले गए थे, जिसमें विश्व योग सम्मेलन का निमंत्रण पत्र भी शामिल था। हमने वह निमंत्रण पत्र पण्डित जी को दिया, और उन्होंने वह निमंत्रण पत्र शिवलिंग पर रखा। आरती के बाद दो घण्टे तक हम मंदिर में ही रहे। फिर हम वापिस अपने गेस्ट हाऊस आये जहाँ थोड़ा आहार और विश्राम लेकर, रात के 11 बजे हम पुन: मंदिर पहुँचे। भगवान केदारनाथ का मध्यरात्रि अभिषेक हमारे अनुष्ठान की अंतिम क्रिया थी। इस अभिषेक के दौरान हम शिवलिंग के एकदम करीब थे। यह हमारा परम सौभाग्य था क्योंकि इसकी अनुमित प्राय: किसी को नहीं दी जाती।

इतनी ऊँचाई पर न फूल उगते हैं, न घास, न पेड़, न और कुछ। वहाँ प्लास्टिक या कपड़े के फूलों से ही शिव जी की पूजा की जाती है। इसलिए हमने पहले ही दिल्ली फोन करके भास्कर परिवार से फूल, बिल्व पत्र, शृंगार हेतु वस्त्र तथा अभिषेक के लिए अन्य आवश्यक सामग्री लाने के लिये कह दिया था। अभिषेक के लिए पण्डित जी हम छ: लोगों को गर्भगृह के भीतर ले गए और हमने अपने साथियों को अलग-अलग दलों में विभाजित कर दिया। एक दल गंगा दर्शन विश्व योगपीठ की ओर से, एक दल रिखियापीठ की ओर से, एक दल संन्यास पीठ की ओर से और एक दल उन सभी लोगों की ओर से अभिषेक करने वाला था, जो श्री स्वामीजी से जुड़े हैं। हम सभी शिवलिंग के चार कोनों में अपना-अपना संकल्प लेकर बैठे थे, 'यह गंगा दर्शन विश्व योगपीठ के लिए', 'यह रिखियापीठ के लिए', 'यह संन्यास पीठ के लिए', और 'यह श्री स्वामीजी, योग और आश्रम से जुड़े सभी लोगों के लिए'। एक अर्से बाद शिवलिंग का अभिषेक असली फूलों और बेल पत्तों से हुआ। शिवसहस्रनामावलि का पाठ किया गया और प्रत्येक नाम के साथ बड़ी श्रद्धा के साथ एक बिल्व पत्र और एक कमल पुष्प शिवलिंग को अर्पित किया गया। हमने अपनी सभी मालाएँ, स्वामी शिवानन्द जी एवं श्री स्वामीजी की सभी तस्वीरें और अपना छोटा-सा शिवलिंग भी भगवान केदारनाथ पर रखा। श्री केदारनाथ की जो तस्वीरें वहाँ खरीदी थीं, उन्हें भी अभिषेक के दौरान शिवलिंग पर स्थापित किया। इस तरह शिवलिंग का शृंगार बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया। सम्पूर्ण अभिषेक मध्यरात्रि तक सम्पन्न हो गया।

तत्पश्चात् हम सभी गेस्ट हाऊस लौटे जहाँ हमने अपने साथियों से कहा, 'अब यहाँ करने के लिए कुछ शेष नहीं। कल सुबह छः बजे हम लोग यहाँ से निकल चलेंगे।' हम लोग रात को डेढ बजे सोये और सुबह साढ़े तीन बजे उठ गये। छः बजे हम केदारनाथ से निकल पड़े और बारह बजे तक हम रामबाड़ा पहुँच गए।

जाको राखे साइयाँ मार सके न कोई

जैसे ही हम रामबाड़ा पहुँचे, उसी समय पर्वत शिखर पर छाया घना बादल फटा और मूसलाधार बारिश होने लगी। हम तेजी से पैदल उतरते गए और जैसे ही हम गौरीकुण्ड पहुँचे, ऊपर जबरदस्त भूस्खलन हुआ और रामबाड़ा का पूरा गाँव तहस-नहस हो गया। गौरीकुण्ड से हम कार में बैठकर सोनप्रयाग के लिए रवाना हुए। जब तक हम सोनप्रयाग पहुँचे, गौरीकुण्ड का पुल बह चुका था और बीस गाड़ियाँ पानी में गिर गई थीं। हमारे पीछे भयंकर भूस्खलन हो रहे थे, जिनसे सब कुछ नष्ट होता जा रहा था।

शाम होते-होते हम रुद्रप्रयाग पहुँचे और वहाँ रात बितायी। अगले दिन याने 16 तारीख को सुबह छ: बजे हमने अपने सहयात्रियों से कहा, 'हमें यहाँ से तुरंत रवाना होना है।' कुछ ही देर बाद नदी किनारे जिस होटल में हम ठहरे थे, वह बाढ़ की चपेट में ढह गया! शाम को ऋषिकेश पहुँचकर हमने वहाँ रात बितायी। नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा था। अगली सुबह जब हमने अपने कमरे की खिड़की खोली तो देखा कि गंगा किनारे सभी मकान जलमग्न हो चुके थे!

इस महाविनाश से हम कुछ ही घण्टे आगे थे। एक दिन में हमने लगभग डेढ़ सौ भूस्खलन देखे होंगे। '2012' नामक फिल्म की तरह महाकाल सब कुछ निगलते हुए हमारे पीछे आ रहा था और हम अपनी गाड़ी में उससे बस थोड़े ही आगे थे। कार के आईने में हम अपने पीछे ऊँचे पहाड़ों को धराशायी होते, सड़कों और गाँवों को बहते देख रहे थे। हमारे पीछे रुद्र की ताण्डव लीला चल रही थी, फिर भी हम पूर्णत: निर्भय और निश्चिन्त थे। हमें किसी प्रकार का डर या तनाव नहीं था, बल्कि खाते-पीते, कीर्तन-भजन गाते हम आगे बढ़ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो किसी उच्च शक्ति ने इस खतरे से बचाने के लिए हमें अपने हाथों में उठा रखा हो। सड़क पर जगह-जगह बड़ी-बड़ी चट्टानें गिरी पड़ी थीं, लेकिन हमारी कार को उनके बीच से निकलने की जगह मिल ही जाती थी। हमने हनुमान चालीसा की सी.डी. लगा रखी थी और ऐसा लग रहा था जैसे हमारी कार हनुमान जी के हाथों में हैं और वही मार्ग के सभी संकटों का मोचन करते जा रहे हैं। बाद में किसी ने कहा भी कि सम्पूर्ण यात्रा के समय ऐसा अनुभव हुआ जैसे हमारे चारों तरफ एक रक्षाकवच बंधा हुआ था और एक अदृश्य शक्ति हमें घेरकर हमारी रक्षा कर रही थी।

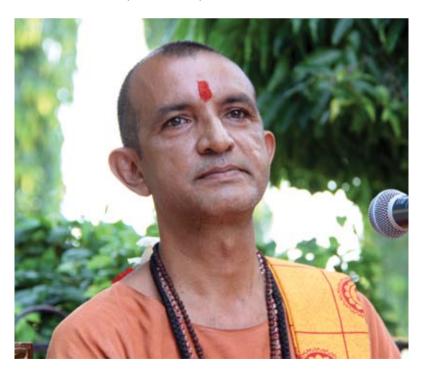
शिव का संदेश

इस तीर्थयात्रा का संदेश कुछ ऐसा था मानो भगवान शिव हमसे कह रहे हों, 'मुझमें विश्वास रखो। तुम्हें मेरा दर्शन प्राप्त हो गया। अब तुम यहाँ से जाओ, क्योंकि मैं सब कुछ बदलने जा रहा हूँ।' भगवान केदारनाथ का अभिषेक करने वाले शायद हम आखिरी व्यक्ति थे। भगवान के इस दिव्य धाम पर जाने का, उनके दर्शन प्राप्त

करने का हमें जो दुर्लभ अवसर मिला, इसके लिए हम भगवान के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हैं। अब शायद कई सालों तक हम या अन्य भक्तगण वहाँ नहीं जा सकेंगे। वहाँ अब केवल मंदिर शिखर शेष है। बाकी सब कुछ दस-बारह फीट ऊँचे मलवे में दबा पड़ा है।

इस केदारनाथ यात्रा में भगवान शिव ने अपने रौद्र स्वरूप का परिचय दिया। लेकिन अपने दिल की गहराई में हमें यही लगता है कि वे हमें दर्शन देने की राह देख रहे थे। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि सबकुछ कायापलट करने से पूर्व उन्हें हमारी ही प्रतीक्षा थी।

हम एक साधारण तीर्थयात्री के रूप में एक विशेष उद्देश्य और प्रयोजन के साथ भगवान के दरबार गये थे, जहाँ हमें बिना किसी विशेष कठिनाई या संघर्ष के सब कुछ प्राप्त हो गया। हमें भगवान शिव के अपार अनुग्रह के साथ-साथ उनके ताण्डव नृत्य का भी प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। याद करने पर यात्रा का पूरा अनुभव अविश्वसनीय-सा लगता है; जहाँ एक ओर साधना में सफलता का संतोष था, वहीं दूसरी ओर घोर विनाश और विपत्ति को देख गहरी तकलीफ भी हुई। अगर हृदय में दूसरों के लिए दु:ख और सहानुभूति है तो साथ ही एक गहन उपलब्धि की अनुभूति भी है। हम जिसके लिए केदारनाथ गए थे उसे पाकर लौटे। ■



Shiva's Message of Light



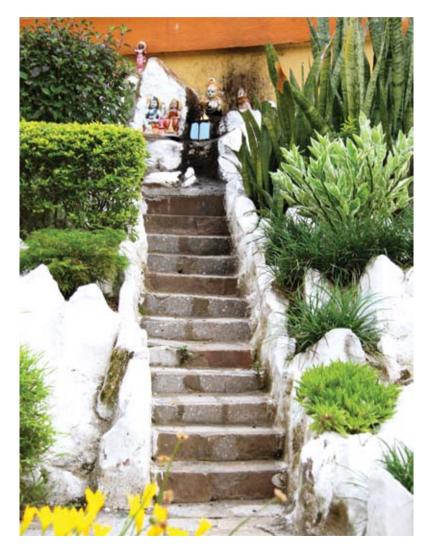
Every day, as part of the pooja and sadhana at Satyam Udyan in Ganga Darshan, small deepaks are lit in front of little statues of different deities placed in the garden. The first deepak was lit in 1998, on the small Mount Kailash rock garden. While the deepak is placed there each evening, mantras are chanted in praise of Lord Shiva.

In June 2012, Swami Niranjan went on a yatra to Mount Kailash. One evening

during this period, a huge storm raged in Ganga Darshan, with wild wind and torrential rainfall. In the midst of this storm, though all the other deepaks had blown out, the Kailash deepak continued to burn long into the night.

Until recently, that was the only time the Kailash deepak had burnt in such a manner. A year later, almost to the day, Swamiji again went on a yatra in the mountains. This time he went to Kedarnath, another sacred pilgrimage place of Lord Shiva in Uttarakhand. It was a shorter trip than the previous one, nevertheless as intense and extreme. On 15th June, a wild storm blew, again with gusting winds and hammering rain. One more time, the Mount Kailash deepak continued to burn in spite of the wind and water, which had blown out all the other deepaks in the garden. Not just that, it was hardly flickering at all. Even after three hours, when no oil was left in the deepak, it continued to burn.

In all the years since this deepak was first lit, it has burnt with such tenacity, courage and determination only when Swamiji was in the mountains worshipping Shiva. What do we learn from these incidents? That God looks after his true devotee, and that to Him there is no one greater than one whose devotion is continuous, unbroken and true. This little oil deepak burning in the wind and rain is a reminder that when one worships the Lord with purity and innocence, as Swamiji does, the Lord is very happy, so happy he will offer his protection, and defy the laws of nature to reveal his grace and message.



एक अविसमरणीय यात्रा

स्वामी सत्यमूर्ति सरस्वती

पादुका दर्शन आश्रम में प्रतिष्ठित भगवान केदारेश्वर की प्रतिमा की सेवा करते हुए हमेशा मन में यही विचार और भाव रहता कि मेरे केदारनाथ भगवान तो यहीं हैं। मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि एक दिन में वास्तव में केदारनाथ जी के दर्शन के लिए तीर्थयात्रा पर जाऊँगा। पर एक दिन अनायास ही स्वामीजी का आदेश प्राप्त हुआ कि मुझे उनके साथ केदारनाथ यात्रा पर जाना है। स्वामीजी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुई यह यात्रा मेरे लिए अविस्मरणीय बन कर रह गयी है, जिसकी कुछ झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पहला दिवस

हमारी यात्रा 10 जून, सोमवार को प्रात: चार बजे प्रारंभ हुई। मुंगेर से यात्रा प्रारंभ करने के पहले कुछ विशेष अनुभव हुए। यात्रा में जाने के तीन दिन पहले मुझे सर्दी, खाँसी और बुखार हो गया। मैंने तुरंत दवाइयाँ लीं तािक यात्रा पर जाने से पहले मैं ठीक हो जाऊँ। लेकिन हुआ कुछ और ही। 9 जून को राित्र में मुझे पूरे शरीर में दर्द एवं बेचैनी के साथ भयंकर बुखार आ गया। ऐसी शारीरिक हालत देखकर मुझे लगने लगा कि मैं अब इस यात्रा पर नहीं जा पाऊँगा। किन्तु मेरे अंदर से आवाज आयी कि सत्यमूर्ति, तुमने तो यात्रा पर जाने की इच्छा व्यक्त की नहीं है, यह तो स्वामीजी की इच्छा से हो रही है, इसलिए सबकुछ अब उनके ऊपर छोड़ दो। और मैंने ऐसा ही किया।

9 जून को मैं रात दो बजे तक सो नहीं पाया था और 10 जून को प्रात: चार बजे यात्रा के लिए प्रस्थान करना था। लेकिन स्वामीजी की कृपा से चमत्कारिक रूप से प्रात: बुखार गायब हो गया और मैंने स्वामीजी एवं स्वामी शिवराज जी के साथ यात्रा के लिए प्रस्थान किया। हम कार से 7.30 बजे पटना पहुँचे, फिर पटना से दिल्ली एवं दिल्ली से देहरादून की यात्रा हवाई जहाज द्वारा सम्पन्न हुई, जो मेरे लिए दीक्षा के समान थी, क्योंकि मैंने जीवन में हवाई यात्रा पहले कभी नहीं की थी। पटना जाते समय स्वामीजी ने कहा भी कि सत्यमूर्ति की आज हवाई यात्रा की दीक्षा भी हो जायेगी। हम देहरादून हवाई अड्डे से टैक्सी द्वारा शाम को श्रीनगर पहुँचे और वहीं पर एक होटल में रात्रि विश्राम किया।

दूसरा दिवस

11 जून को प्रात: श्रीनगर से प्रस्थान कर हम दोपहर में सोनप्रयाग पहुँचे, वहाँ पर थोड़ा विश्राम किया और दोपहर के बाद गौरीकुण्ड के लिए प्रस्थान किया। शाम में गौरीकुण्ड पहुँचे एवं वहाँ रात्रि विश्राम हुआ। शाम में गर्म जल के गौरी कुण्ड के दर्शन भी किये।

देहरादून से श्रीनगर, श्रीनगर से सोनप्रयाग एवं सोनप्रयाग से गौरीकुण्ड की यात्रा टैक्सी द्वारा सम्पन्न हुई, जो बहुत ही आनन्ददायक रही, क्योंकि रास्ते में स्वामीजी से प्राचीन काल में की जाने वाली तीर्थयात्राओं से सम्बन्धित सत्संग सुनने को मिलता रहा। मार्ग में निदयों के संगम एवं पेड़-पौधों की हरीतिमा से भरे दृश्य देखने को मिलते, मन प्रफुल्लित हो जाता, किन्तु इन सभी से आनन्दायक था स्वामीजी का सत्संग, जिसमें उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में जब कोई व्यक्ति तीर्थयात्रा के लिए जाता तो पहले ही उसकी अन्त्येष्टि कर दी जाती थी कि पता नहीं वह वापस लौटेगा या नहीं, और यदि वह घर लौट कर आ जाता था तो पूरे वाद्य यंत्रों के साथ धूमधाम से उसका स्वागत किया जाता था।

तीसरा दिवस

12 जून को प्रात:काल हमने गौरीकुण्ड से श्रीकेदारनाथ धाम के लिए प्रस्थान किया। यह यात्रा पैदल एवं घोड़े द्वारा सम्पन्न हुई। हम 10.30 बजे गरुड़ चट्टी, रामानंद आश्रम, हनुमान गुफा पहुँचे और वहाँ पर गुफा का दर्शन किया। फिर 11 बजे श्रीकेदारनाथ धाम पहुँच गये। 1 बजे मंदिर दर्शन के लिए गये, फिर संध्या 5 बजे पुन: मंदिर गये और 6.30 से 7.00 बजे तक मंत्रों एवं स्तोत्रों के पाठ के साथ भगवान शिव की आराधना की, जो आनन्दिवभोर कर देने वाली थी। इसके बाद हमने श्रीशंकराचार्य जी की समाधि के दर्शन किये।

चौथा दिवस

अगले दिन, 13 जून को प्रात: 9 बजे स्वामीजी ने अपना अनुष्ठान केदारनाथ मंदिर के प्रांगण में स्थित यज्ञशाला में प्रारम्भ किया। यह अनुष्ठान 11.30 बजे सम्पन्न हुआ। इसी अनुष्ठान के दौरान स्वामी शिवराज ने दुर्गम ब्रह्मसरोवर की यात्रा सम्पन्न की। अपनी साधना सम्पन्न करने के पश्चात् दोपहर में स्वामीजी ने साधुओं के साथ संगत की।

संध्या के समय हम लोग स्वामीजी के साथ एक विशेष पूजा एवं आरती में भाग लेने के लिए गये। हमें भगवान केदारनाथ के सामने बैठकर मंत्रों का पाठ करने एवं आरती दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आरती लगभग एक घण्टे पैंतालिस मिनट की थी। ऐसी आरती मैंने जीवन में पहले कभी नहीं देखी थी। आरती के समय भगवान दिव्य वस्त्रों एवं अलंकारों से सजे हुए थे, साथ ही भगवान के पुजारी भी दिव्य वस्त्रों से सजे हुए थे। आरती के बीच मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि मैं मुंगेर आश्रम के अखाड़े में भगवान के साथ हूँ। जहाँ पर हवन के समय लोग बैठते हैं, उसी स्थान के बीच में भगवान दिव्य वस्त्रों एवं अलंकारों से सुशोभित होकर वैसे ही बैठे हुए हैं जैसे केदारनाथ में दिखाई पड़ रहे थे।

मेरे मन में प्रश्न उठा कि भगवान को रहने के लिए स्थान कहाँ दूँ। स्वत: उत्तर मिलता है कि स्वामीजी ने पादुका दर्शन आश्रम में आपकी प्रतिमा स्थापित की है, उसी प्रतिमा में प्रवेश कर जाइये और अपना दुर्लभ दर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान करते रहिये, जिससे आपके भक्त लोग कृतार्थ होते रहें, यही मेरी प्रार्थना है भगवन्! मेरे दोनों नयनों से अश्रुपात होने लगता है और कुछ समय बाद आरती समाप्त हो जाती है।



मुझे लगता है कि भगवान ने ऐसा अनुभव इसलिए प्रदान किया कि यात्रा पर जाने से पहले मेरे मन में इच्छा या विचार ही नहीं था कि मैं केदारनाथ जी की यात्रा पर जाऊँगा। मेरे मन में ऐसा भाव था कि मेरे केदारेश्वर भगवान तो पादुका दर्शन में ही हैं। यात्रा पर जाने के एक-डेढ महीने पहले मैंने यही बात अपने एक साथी को बतायी थी कि मेरे केदारेश्वर भगवान तो यहीं हैं, और मेरी इस बात को भगवान ने अपनी कृपा से सत्य बना दिया। भगवान की लीला अपरम्पार है, जिसका शब्दों में वर्णन संभव नहीं। जय श्री केदारनाथ की!

पाँचवा दिवस

14 जून को स्वामीजी ने पुन: प्रात: 9.30 बजे अपना अनुष्ठान मंदिर प्रांगण में स्थित यज्ञशाला में प्रारंभ किया। अनुष्ठान 12.00 बजे सम्पन्न हुआ। यहाँ स्वामीजी की सहजता एवं सरलता देखकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

इस अनुष्ठान के समय मेरे साथ एक घटना घटी, जो मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण थी, क्योंिक में कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। जिस समय स्वामीजी अनुष्ठान कर रहे थे, उसी समय स्वामी रामानंद जी श्रीकेदारनाथ के दर्शन करके बाहर निकल रहे थे। अनुष्ठान सम्पन्न करने के बाद स्वामीजी ने मुझसे कहा कि तुम यहीं रहना और स्वयं स्वामी रामानंद जी से मिलने के लिए चले गये। इसी बीच हम लोग जहाँ ठहरे थे, वहाँ के पंडित आये और मुझे भी रामानंदजी के दर्शन के लिए जाने को कहा। उन्हें वहाँ पर खड़ा करके मैं भी रामानंदजी के दर्शन

के लिए चला गया। जब वापस आया तो स्वामीजी ने पूछा कि तुम कहाँ चले गये थे। मैंने सब कुछ बता दिया। स्वामीजी ने कुछ कहा नहीं, परंतु मुझे अंदर-ही-अंदर बहुत ग्लानि हो रही थी कि मैंने क्या किया। फिर मैंने अपने आपको प्रतिपक्ष भाव के द्वारा संभाला और ऐसा संकल्प लिया कि इस प्रकार की गलती दुबारा नहीं करूँगा और पूरी सजगता के साथ अपना कर्तव्य निभाऊँगा।

संध्याकाल में स्वामीजी आरती के पहले बहुत-से नागा साधुओं से मिले। फिर आरती का दर्शन किया और मध्यरात्रि में षोडशोपचार के साथ भगवान केदारनाथ की पूजा सम्पन्न की। स्वामीजी की असीम कृपा से हमें भी उनके साथ भगवान की षोडशोपचार पूजा करने का अवसर प्राप्त हुआ, जो बहुत ही आनन्ददायक एवं अविस्मरणीय रहा, क्योंकि उस समय से ऐसा लग रहा है कि भगवान केदारनाथ का निवास मेरे हृदयाकाश में हो गया है, जबकि ऐसा कहा जाता है कि भगवान शिव का स्थान आज्ञाचक्र में है।

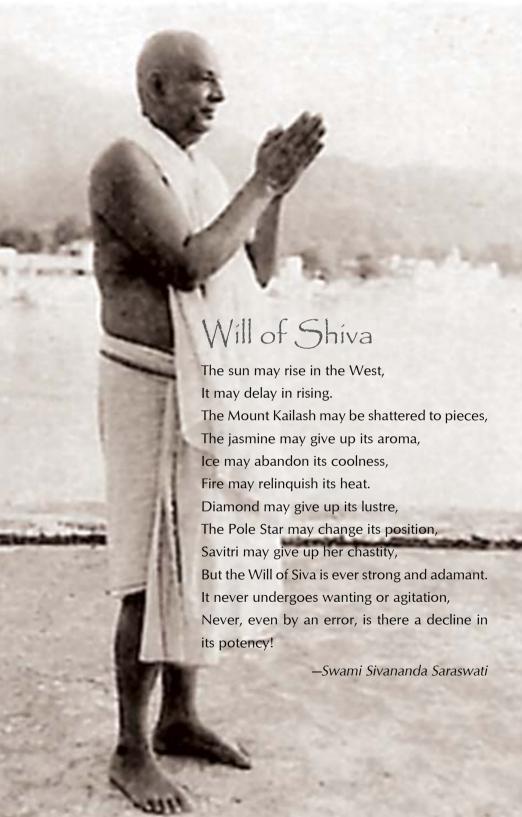
पूजा के समापन के पश्चात् जब हम लोग अपने निवास स्थान पहुँचे तब स्वामीजी ने कहा कि सत्यमूर्ति ने आज योगेश्वर भगवान के बाद सीधे केदारनाथ भगवान की षोडशोपचार पूजा की है। स्वामीजी की इस बात को सुनने के बाद मेरा मुख बंद हो गया, आँखें आँसुओं से भर गयीं, मैंने अपना सिर स्वामीजी के श्रीचरणों में रख दिया और उस अद्भुत अनुभव में विलीन हो गया।

छठे, सातवें और आठवें दिवस में वापसी यात्रा

15 जून को प्रात:काल श्रीकेदारनाथ से वापसी यात्रा प्रारंभ हुई, जो बहुत ही कृपापूर्ण एवं अनुभवप्रदायी थी, क्यों हम लोगों के आगे तो कम, परन्तु पीछे के रास्ते अत्यंत दुर्गम बनते जा रहे थे। 12 बजे हम लोग गौरीकुण्ड पहुँचे। श्रीकेदारनाथ से गौरीकुण्ड की यात्रा पालकी एवं घोड़े द्वारा सम्पन्न हुई। गौरीकुण्ड से रुद्रप्रयाग की यात्रा टैक्सी द्वारा सम्पन्न हुई। रुद्रप्रयाग में रात्रि विश्राम हुआ। उसी समय मुझे स्वामीजी द्वारा कही हुई बात याद आई, जो उनके गुरु, श्री स्वामी सत्यानंद जी ने उन्हें बतायी थी कि ये पहाड़ बहुत ललचाते हैं, लेकिन इनमें तुम रह नहीं पाओगे। वापसी यात्रा में मैंने उनकी यह बात चिरतार्थ होते देखी।

16 जून को प्रात:काल 8 बजे हम लोगों ने रुद्रप्रयाग से प्रस्थान किया, किन्तु कठिन परिस्थितियों के कारण देहरादून नहीं पहुँच सके, इसलिए ऋषिकेश में रात्रि विश्राम किया।

17 जून की वापसी यात्रा ऋषिकेश से देहरादून टैक्सी द्वारा एवं देहरादून से दिल्ली होते हुए पटना तक हवाई जहाज द्वारा सम्पन्न हुई। फिर पटना से मुंगेर की यात्रा टैक्सी द्वारा सम्पन्न हुई। इस प्रकार स्वामीजी के सान्निध्य में यह रोचक और दुर्गम यात्रा पूर्ण कर हम लोग रात 11 बजे वापस मुंगेर आश्रम आ गये। ■



शंकर सुखकर प्रलयंकर

गुरुवर निरंजन का केदार गमन, औ' प्रचण्ड प्रलय से प्रत्यावर्तन । जिस भी दृष्टि से देखो यह घटनाक्रम, मालूम पड़ते मर्म और रहस्य गहन॥।॥

जहाँ किया पाण्डवों ने स्वर्गारोहण, स्वामीजी ने लिया वहाँ प्रबल एक प्रण। 'न हम चाहें निर्वाण न स्वर्गारोहण, स्वर्ग का धरा पर करेंगे हम आवाहन'॥2॥

'धरा के अधीर अधरों में अब हम, करेंगे स्वर्गापगा का अभिनव सिंचन'। 'गंगाधर' और 'गंगापुत्र' का गजब सम्बन्ध, 'सत्य हो संकल्प तुम्हारा' दे दिया वचन॥3॥

किया केदारनाथ ने जटा विमोचन है। पूरा जी करना था भक्त का यह प्रयोजन । दौड़ पड़ी माता करने पुत्र का आलिंगन, औ' इठलाती लहरों ने मचाया खूब उधम॥४॥

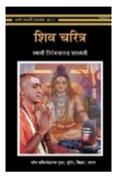
रोष आशुतोष का है केवल एक भ्रम, शंकर प्रलयंकर का ताण्डव है नर्तन। इस नर्तन से ही होता जग में नवसृजन, बीज के मरण बिना नहीं हो अंकुरण॥5॥

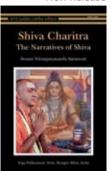
सिदयों पहले आदि शंकराचार्य के जीवन, का केदार में हुआ था अंतिम विलयन। मन में उठता अब यह स्वाभाविक चिंतन, शंकर का निरंजन रूप में क्या पुनरागमन ...॥६॥



Shiva Charitra The Narratives of Shiva







February 2009. Swami Niranianananda Saraswati gave a unique series of satsangs, telling the stories of Shiva. This, however, was no ordinary storytelling. Held at the precincts of the ancient temple of Baidyanatheshwar Shankarbag, Munger, the program became the medium of a special awakening. Everyone present felt the unfoldment of Shiva consciousness at their own level.

Shiva Charitra – Narratives of Shiva is a compilation of these satsangs. Covering a wide range of topics, including creation, pashupata tantra, the Shiva-Shakti principle, the philosophy of bhakti, the significance of the Shivalingam, Swami Niranjan explains the symbologies inherent in the stories of Shiva. Whether one ponders over the deeper meanings, or simply delights in the lila, the cosmic sport, of the divine, the grace of Shiva and guru is undoubtedly experienced across the pages.

For an order form and comprehensive publications price list, please contact:

Yoga Publications Trust,

Ganga Darshan, Fort, Munger, Bihar 811 201, India Tel: +91-6344 222430, Fax: +91-6344 220169

A self-addressed, stamped envelope must be sent along with enquiries to ensure a response to your request.



द्वरि ॐ

ऑवाहन एक द्वैभाषिक, द्वैमासिक पत्रिका है जिसका सम्पादन, मद्रण और प्रकाशन श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के संन्यासी शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य लाभ, आनन्द और प्रकाश प्राप्ति के इच्छक व्यक्तियों के लिए किया जा रहा है। इसमें श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती एवं स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती की शिक्षाओं के अतिरिक्त संन्यास पीठ के कार्यक्रमों की जानकारियाँ भी प्रकाशित की जाती हैं।

सम्पादक - स्वामी योगमाया सरस्वती सह-सम्पादक - स्वामी शिवध्यानम् सरस्वती संन्यास पीठ, द्वारा-गंगादर्शन, फोर्ट, मुंगेर 811201. बिहार, द्वारा प्रकाशित। थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड, हरियाणा में

मद्रित।

© Sannyasa Peeth 2013

पत्रिका की सदस्यता एक वर्ष के लिए पंजीकृत की जाती है। देर से सदस्यता ग्रहण करने पर भी उस वर्ष के जनवरी से दिसम्बर तक के सभी अंक भेजे जाते हैं। कुपया आवेदन अथवा अन्य पत्राचार निम्नलिखित पते पर करें –

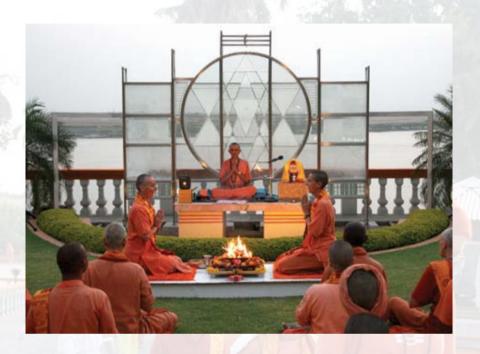
संन्यास पीठ

द्वारा-गंगा दर्शन. फोर्ट, मुंगेर, 811201, बिहार, भारत

🖂 अन्य किसी जानकारी हेत् स्वयं का पता लिखा और डाक टिकट लगा हुआ लिफाफा भेजें, जिसके बिना उत्तर नहीं दिया जायेगा।

कवर फोटो: केदारेश्वर, पाद्का दर्शन, मुंगेर अन्दर के रंगीन फोटो : 1: श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती: 2-3: केदारेश्वर: 4-5: ब्रह्म सरोवर, केदारनाथ से आगे: 6-7: केदारनाथ मंदिर: 8: स्वामी निरंजनानन्द सरस्वतीः

 Registered with the Registrar of Newspapers, India Under No. BIHBIL/2012/44688



Sannyasa Peeth Events 2014

Jan 24-Feb 3 Discourses on Ramayana by Pd. Shamb-

hu Sharan, Kolkata

Feb 1-Jul 25 6-month Gurukul Lifestyle Course Feb 4-Feb 13 2016 2-year Sannyasa Training Course

Mar 20-26 Discourses on Srimad Bhagavatam by

Swami Girishananda, Jabalpur

Apr-Oct All-India Yoga Yatra

Aug 1-Jan 25 6-month Gurukul Lifestyle Course Sep 8-12 Sri Lakshmi-Narayana Mahayajna

For more information on the above events, contact:

Sannyasa Peeth, c/o Ganga Darshan, Munger, Bihar 811201, India Tel: 06344-222430, 06344-228603, 09304799615 Fax: 06344-220169 Website: www.biharyoga.net

M A self-addressed, stamped envelope must be sent along with enquiries to ensure a response to your request